चन्दामामा

दीवाली विशेषांक

Chandamama, Nov. '51

Photo by Moorthy Vasan

ज्योति के फूल

Your Family needs..

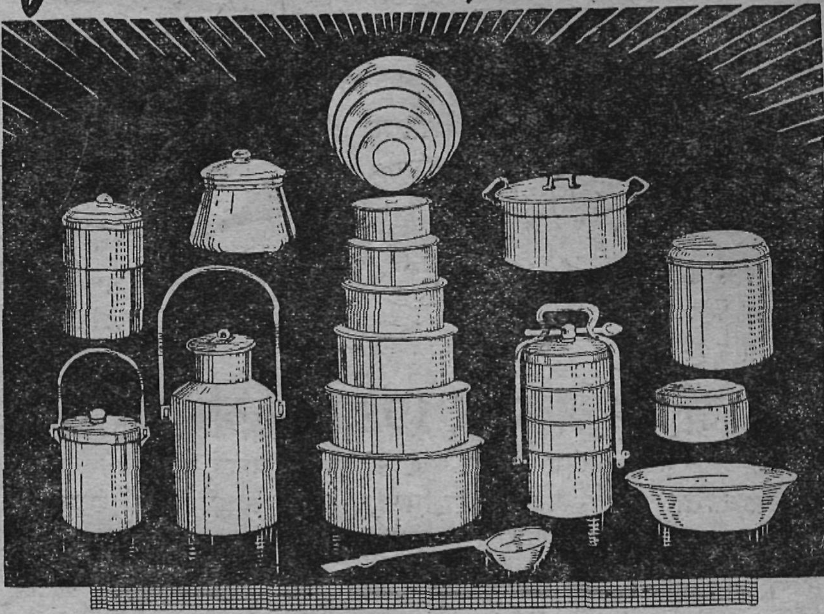

PREMIER METAL · MYSORE · FACTORY · M.K.S · MADE IN INDIA

SUN BRAND

SUN BRAND

FOR QUALITY & DURABILITY

THE MYSORE PREMIER METAL FACTORY

MANUFACTURERS OF ALUMINIUM, BRASS & STAINLESS STEEL UTENSILS

124, MINT STREET, G. T. MADRAS. I

दी मैसूर प्रीमियर मेटल फ्याक्टरी

आल्युमीनियम, पीतल और स्टेनलेस स्टील की चीजें बनानेवाले :

१२४, मिंट स्ट्रीट जी० टी० मद्रास

अल्यूमीनियम के बक्से

सब तरह के उपयोग के लिए

हल्के मजबूत तथा आकर्षक

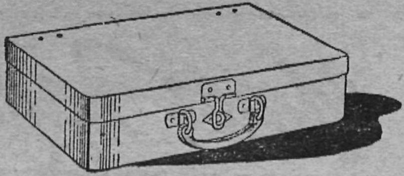

विद्यार्थियों का बक्सा
आकर 12"×9"×3" दाम 12-8-0

सर्वश्रेष्ठता

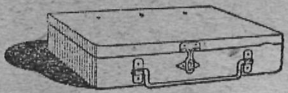

पान बक्सा
आकर 7"×4"×1½"
दाम 2-12-0

PURE ALUMINIUM THE CROWN
का चिह्न

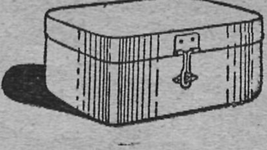

टाईलेट बक्सा
7"×5¼"×1½"
दाम 3-0-0

जीवनलाल (1929) लिमिटेड

अल्यूमीनियम के हर तरह के सामान बनाने वाले

कलकत्ता, बम्बई, मद्रास, राजमन्द्री, अदन, दिल्ली और रंगून

दीपावली अभिनन्दन !

हमारे सभी पोषकों और ग्राहकों
को हार्दिक दीपावली अभिनन्दन !

गोपालजी चाँपशी अंड कं०

'तिलक' हींग और 'वाच' मार्का कपूर के
बनाने वाले व मेंथाल और कपूर के व्यापारी ।

३० गोविन्दप्पानायक स्ट्रीट, मद्रास – १.

शाखा : मदुरा

मुख्य कार्यालय : बम्बई

दीपावली के शुभ

अवसर पर एक

आकर्षक उपहार !

कंचन हेर आइल

(मधुर सुगंधित तेल)

प्रभाव - पूर्ण वैज्ञानिक पर्यवेक्षण में उत्तम - तर द्रव्यों द्वारा तैयार होने के कारण यह केशों को स्वस्थ और काँतिवान बना कर उनकी वृद्धि में सहायक होता है और रूसी को दूर करके उनको गिरने से बचाता है । मस्तिष्क को शीतल रखता है और स्नायुओं को शांति देता है ।

हर जगह एजण्ट चाहिए ।

कोणार्क केमिकल एंड ब्यूटी प्रोडक्ट्स

2/1 A, प्रेमचंद बराल स्ट्रीट, कलकत्ता ।

चार भाषाओं में चन्दामामा

माँ-बच्चों के लिए एक सचित्र मासिक पत्र

मीठी कहानियाँ, मनोरंजक व्यंग्य-चित्र, सुन्दर कविताएँ, पहेलियाँ और तरह तरह के लेख।

हिन्दी, तमिल,
तेलुगू, कन्नड

भाषाओं में प्रकाशित होता है।

एक प्रति का दाम ।=)

एक साल का चन्दा ४॥)

दो साल का चन्दा ८)

अगर आप चाहते हैं कि चन्दामामा आप को हर महीने नियम से मिलता रहे तो चन्दामामा के ग्राहक बन जाइए।

★

चन्दामामा पब्लिकेषन्स

पो. बा. १६८६ :: मद्रास-१.

नटखट मुन्ना ...

मुन्ना एक नटखट व मैला कुचैला लड़का था। वह सवेरे उठते ही बिना मुँह-हाथ धोए खाने लग जाता। अपनी इस गन्दगी का उसे जरा भी ख्याल न था। खेलते समय हमेशा वह मकड़ों व तिलचट्टों की खोज में रहता व सौभाग्यवश किसी जाले में यदि मकड़ा देख पाता तो उसे बिना सङ्कोच अपने हाथों से पकड़ लेता, एक एक करके उसके हाथ-पैर तोड़ देता बस मल कर मार देता। ऐसा करने के बाद भी उन्हीं हाथों से जो चीज पाता खाने लगता। तिलचट्टा उसकी बहुत प्रिय वस्तु थी। उसको पकड़ कर डोरे से बाँध कर उड़ाता फिरता व जब वह थक कर उड़ने में असमर्थ हो जाता तो उसे भी मसल कर मार डालता। ऐसा करने में उसे बड़ा आनन्द आता था। इस गन्दगी के कारण अन्य लड़के उसके साथ खेलना भी पसंद नहीं करते थे। कुछ दिनों के बाद उसके मसूडे फूल गए और उनसे खून व पीब निकलने लग गया। जीभ में भी घाव निकल आए। अब बेचारा न कुछ खा पाता था न खेलने ही में मन लगता था। धीरे-धीरे बदन में खुजली होने लगी व हाथों में भी घाव निकल आए। अपने मुन्ने की ऐसी हालत देख उसके पिता जी उसे डाक्टर के पास ले गए। डाक्टर ने कहा कि गन्दगी के कारण ही यह सब रोग उत्पन्न हुए हैं व मुन्ना के पिता को सलाह दी कि प्रति दिन केलकेमिको द्वारा प्रस्तुत नीम टूथ पेस्ट से इसके

दाँत साफ़ कराइए व मार्गो सोप से स्नान करने के बाद हाथों में मार्गुयेन्टमलहम लगाइए। इससे जल्द आराम हो जावेगा। डाक्टर के आदेशानुसार करने से मुन्ना शीघ्र ही अच्छा हो गया। उस दिन से मुन्ना आज बड़ा हो गया है। किन्तु डाक्टर के बताए मार्ग पर चलने के कारण स्वस्थ है। इसलिए बच्चों! गन्दगी से हमेशा दूर रहना! नहीं तो तुम्हारा भी नटखट मुन्ना का सा ही हाल होगा।

शिशुओं के लिए : **दि कैलकटा केमिकल कं० ली०** ३५, पंडितिया रोड़, कलकत्ता द्वारा प्रसारित

आंध्र इनस्यूरेंन्स कम्पनी, लिमिटेड

प्रधान कार्यालय :: मछलीपट्नम

बीमा व्यापार में २५ साल से सफलता और समर्थता के साथ सेवा करने वाली संस्था।

१९५० में नया व्यापार	२ करोड़
कुल चालू रकम	९ करोड़
कुल बीमे की रकमें	२ करोड़ से ज्यादा
सालीना आमदनी	४५ लाख से ज्यादा

जीवन बीमे के साथ साथ आग, मोटर, नौका दुर्घटनाओं का व्यापार भी किया जाता है।

हमारे कार्यालय: मद्रास, बम्बई, कलकत्ता, नागपुर, देहली, बंगलोर, बेलगाँव, अनन्तपूर, सिकन्दराबाद, कोयंबत्तूर, बरहमपूर, एर्नाकुलम, बेजवाडा, गुण्टूर, जमशेदपूर, विशाखपट्नम, राजमन्द्री, मँगलोर, दिब्रूघर (आसाम)

विश्वास! ....

अत्युत्तम टाइलेट साबुन में आप जो कुछ चाहते हैं वह सब

मैसूर सांडल सोप में

है, यह हम विश्वास के साथ कह सकते हैं।

हर जगह मिलता है।

गवर्नमेंट सोप फ्याक्टरी, बैंगलोर।

नागपुर ब्रांच . . . : माउन्ट होटल के पीछे

कलकत्ता बिक्री केन्द्र . : ४ ताराचन्द दत्त स्ट्रीट

हाथरस ब्रांच . . . : . . . पसरहट्टा बाजार

. . यहाँ से आम जनता एवं एजण्टगण अपनी . . आवश्यकतानुसार हमारी सभी वस्तुएँ खरीद सकते हैं।

माँ-बेटा

किसी समय मालव देश पर वीरसिंह नाम का राजा राज करता था। उसकी रानी जयप्रदा बड़ी पतिव्रता थी। उस राजा के राज में शांति विराजती थी। लोग सुखी और संपन्न थे। लेकिन राजा-रानी को एक ही चिंता थी। उनके कोई संतान न थी। उन्होंने कितने ही दान-पुण्य किए। लेकिन कोई लाभ न हुआ। एक बार उस राजा के दरबार में एक महात्मा पधारे। उन्होंने राजा का चिंताग्रस्त बदन देखा और कहा—'राजन्! मैंने तुम्हारी चिंता का कारण जान लिया। हताश न हो! मैं तुम्हारा दुख दूर करूँगा।' यह कह कर उसने अपनी झोली से कोई जड़ी-बूटी निकाल कर राजा को दी और कहा—'यह जड़ी एक लोटे में डाल कर वह पानी रानी को पिलाओ।' फिर महात्मा चले गए। राजा ने महात्मा के कथनानुसार किया। दूसरे साल रानी के चाँद सा लड़का पैदा हुआ। यह बहुत दिन पहले की कहानी है। आज वैसे महात्मा नहीं हैं। लेकिन विज्ञान के प्रभाव से वैसे औषध आज भी मिलते हैं। नारियों को मातृत्व का वर देने के लिए 'लोध्र' वैसा ही एक औषध है।

केसरी कुटीरम लिमिटेड : रायपेट, मद्रास.

३० वर्षों से बच्चों के रोगों में मशहूर

बाल-साथी

सम्पूर्ण आयुर्वैदिक पद्धति से बनाई हुई—बच्चों के रोगों में यथा बिम्ब-रोग, ऐंठन, ताप (बुखार) खाँसी, मरोड़, हरे दस्त, दस्तों का न होना, पेट में दर्द, फेफड़े की सूजन, दाँत निकलते समय की पीड़ा आदि को आश्चर्य-रूप से शर्तिया आराम करता है। मूल्य १) एक डिब्बी का। सब दवा वाले बेचते हैं।

लिखिए—वैद्य जगन्नाथ, बराच आफिस,
नडियाद, गुजरात

यू. पी. सोल एजेण्ट :—श्री केमीकल्स,
१३३१, कटरा खुशालराय, दिल्ली।

ग्राहक बनिए!

बहुत से लोग शिकायत करते हैं कि उन्हें एजण्टों से चन्दामामा की कापियाँ नियमित रूप से नहीं मिलतीं। उनके लिए हमारा सुझाव है कि वे तुरन्त चन्दामामा के वार्षिक या द्वैवार्षिक ग्राहक बन जाएँ। तब उन्हें चन्दामामा की प्रतियां नियमित रूप से मिला करेंगी। आज ही लिखिए।

वार्षिक ४॥) द्वैवार्षिक ८)

व्यवस्थापक : ग्राहक-विभाग
चन्दामामा (हिन्दी)
३७, आचारप्पन स्ट्रीट, मद्रास-१.

कुछ मातायें यह नहीं जानतीं !

जब तुम तकलीफ़ में होते हो या तुम्हारे कपड़े रगड़ खाते हों तो लोग तुम्हें चिड़चिड़ा क्यों कहते हैं ? तुम्हारी सबसे बड़ी जरूरत यह है कि नहलाने या कपड़े बदलनेके समय तुम्हारे शरीर पर थोड़ा-सा जान्सन्स बेबी पाउडर छिड़का जावे—इससे तुम्हें बड़ा आराम मिलेगा।

कोई तुम्हारी मां को जा कर यह क्यों नहीं कहता कि जान्सन्स बेबी पाउडर अत्यंत मुलायम त्वचा के लिये बनाया गया है। मुझे विश्वास है कि इसके बाद वह उसे जरूर प्रयोग में लावेगी।

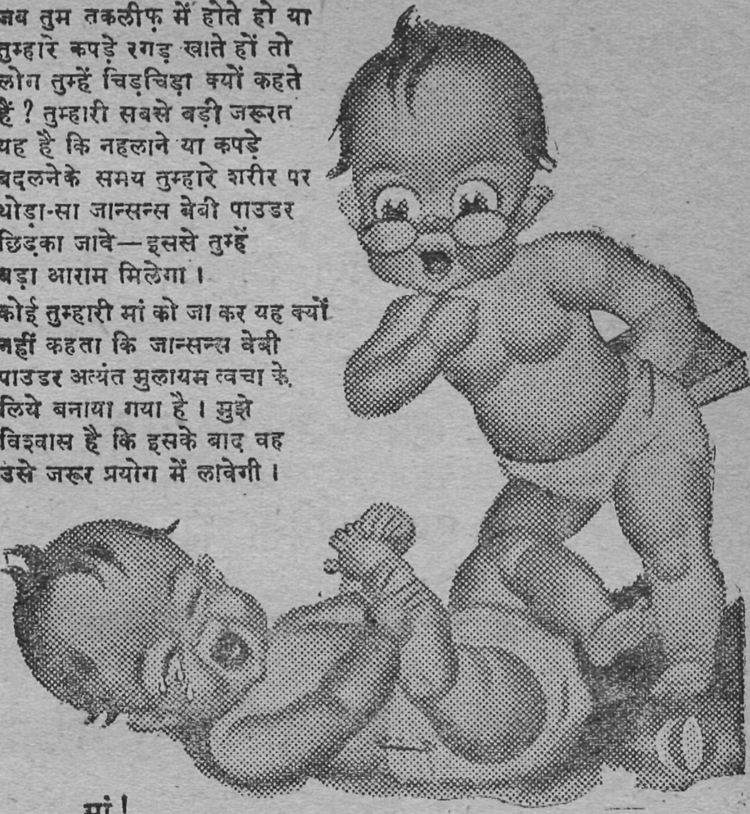

मां !

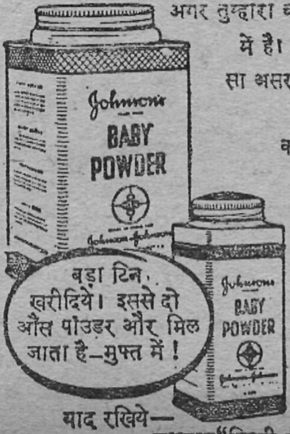

अगर तुम्हारा बच्चा रोता है तो उसका कारण यह है कि वह तकलीफ़ में है। तुम्हें मालूम हो जायगा कि जान्सन्स बेबी पाउडर जादू का सा असर करता है। जान्सन्स बेबी पाउडर के विशेष उपकरण कोमल त्वचा के लिये सुखद और सौम्य होते हैं—यही कारण है कि इतनी मातायें (और पिता!) उसका स्वयं प्रयोग करती हैं। आज ही एक टिन खरीद लीजिये—बच्चे के लिये और आपके लिये भी।

बालक के लिये उत्तम—और आपके लिये भी

Johnson's BABY POWDER

Regd. Trade Mark

जान्सन्स बेबी पाउडर

प्रमुख वितरक : आई सी आई (इंडिया) लिमि०

याद रखिये—
जान्सन्स "प्रिक्ली हीट पाउडर" आपको गर्मी-दानों से मुक्त कर देता है।

J. 4816

स्टार आफ इंडिया

पेन्सिलों के लिए

दी मद्रास पेन्सिल फ्याक्टरी को

★

पहले दर्जे की छपाई और लिथो प्रिंटिंग के लिए

हो एण्ड कम्पेनी को

सब तरह के स्टेशनरी सामान के लिए

वी० पेरुमाल चेट्टी एण्ड सन्स को

लिखिए :

★

वी० पेरुमाल चेट्टी एण्ड सन्स

३, सिंगूगर स्ट्रीट मद्रास - १.

ADS

एम० ए० पी० इंडस्ट्रीज़ :: तोंडियारपेट, मद्रास

विषय-सूची

दीवाली	...	१०	नन्ही कहानियाँ	...	५५
बड़ों के बचपन में	...	१२	धमाके पंडित	...	५७
भोला-भाला	...	१३	मिट्ठू की कहानी	...	६०
काठ का घोड़ा	...	१७	ऊर्णनाभ	...	६२
पेट के लिए	...	२५	चालाक लड़की	...	६७
कपूत	...	२९	डाकू और लड़का	...	७२
विचित्र जुड़वाँ	...	३३	करके देखो	...	७३
सूअर का भाई	...	४१	भानुमती की पिटारी	..-	७४
शीसे का बेर	...	४४	दीप सजाओ	...	७५
बेर की गुठली	...	४९	रङ्ग भरो कहानी	...	७६

चन्दामामा

माँ - बच्चों का मासिक पत्र

संचालक : चक्रपाणी

दीवाली के इस अत्यन्त शुभ अवसर पर चन्दामामा का यह विशेषांक पाठकों के हाथों में रखते हुए हमें बड़ी खुशी हो रही है। हो सकता है कि यह उतना आकर्षणीय नहीं हो, जितना हम इसे बनाना चाहते थे। फिर भी यह निस्सन्देह कहा जा सकता है कि जहाँ तक हम से हो सका, हमने किया। इस मँहगी के जमाने में पत्रिका का साधारण अंक निकालने में ही अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। फिर विशेषांक निकालने में तो कहना ही क्या? हम नहीं कह सकते कि हमारा श्रम कहाँ तक सफल हुआ। इसका निर्णय तो पाठक ही कर सकते हैं। फिर भी जब हम सोचते हैं कि हमारी राह में कैसी कैसी अड़चनें पड़ीं तो हमारे श्रम का यह फल गर्व का कारण बन जाता है। अपने पाठकों को सन्तुष्ट करना ही सर्वदा हमारा ध्येय रहा है और रहेगा। इसमें अगर कभी हमें असाधारण सफलता नहीं मिलती तो हम पाठकों से सब्र करनेका अनुरोध मात्र कर सकते हैं। आशा है कि पाठकों को यह अंक संतृप्त करेगा। दीपावली के अवसर पर आपको हमारा हार्दिक अभिनन्दन!

वर्ष 3—अंक 3
नवंबर 1951

एक प्रति 0-6-0
वार्षिक 4-8-0

दीवाली

राजखेट के जमींदार थे
मुसलमान इक, अलीनवाज।
दयाशील, दानी, अति सज्जन,
सभी जमींदारों के ताज।

दीन-जनों का पालन करते
वे अपनी सन्तान समान।
इसीलिए लोगों में था उन
के प्रति प्रेम और सम्मान।

उसी गाँव में एक सेठ था,
विजय लाल था उसका नाम।
रुपया-पैसा खूब कमाना
एकमात्र था उसका काम।

आस-पास के गाँवों वाले
हों दरिद्र या हों धनवान,
उसके कर्जदार सब; उसकी
मुट्ठी में थे सब के प्राण।

उसके चंगुल में फँस चौपट
हुए हाय! कितने घर-बार!
औरों की क्या बात; गाँव के
जमींदार थे स्वयं शिकार।

था ले रखा उन्होंने खुद इस
विजय लाल से कर्ज़ बहुत।
आश्रित लोगों, दीन याचकों
को सहाय करने के हित।

धीरे धीरे कर्ज बढ़ गया
जमींदार डूबे सर तक।
यहाँ तक कि सब जायदाद थी
विजय लाल के घर बंधक।

फैली खबर गाँव में–'अब क्या?
जमींदार का नाश हुआ!'
सुन कर यह हर दीन-दुखी का
हृदय अतीव उदास हुआ।

शत शत दीप जला कर आई
हिंदू-जन की दीवाली;
ज्योतिर्मय कञ्चन-कुसुमों से
सजा निशा-तरु की डाली।

आतिशबाजी जला रहे थे
घर घर बालक प्रमुदित-मन।
महानंद के मधुर-हास से
पुलकित था प्रत्येक सदन।

' बैरागी '

अलीनवाज चढ़े घोड़े पर,
चले देखने दीवाली;
यद्यपि उनके मन में चिंता
तिमिर-घटा छाई काली।

कुछ क्षण में घोड़ा आ निकला
विजय लाल के घर की ओर।
दौड़ा आया उन्हें दूर से
देख, सेठ हो हर्ष - विभोर।

' बहुत दिनों पर आज भाग्यवश
आ निकले हैं इधर हुजूर!'
कह नवाज को अपने घर में
सेठ ले गया कर मजबूर।

सजा हुआ था घर दीपों से,
झूल रहे थे बंदनवार।
उनको आसन पर बिठलाया
उसने कर अनेक सत्कार।

'ऋण की बात चलाएगा यह!'
लगे सोचने अली नवाज।
बिना विक्षुब्ध हुए न रह सके
पर शिष्टता देख यह आज।

थोड़ी देर हुई, नवाब ने
विदा सेठ से माँगी तब।
बोला सेठ—'हुजूर! ठहरिए!
मैं फुलझड़ी छोड़ दूँ अब!'

कह कर सेठ गया, पेटी से
कुछ कागज झट ले आया।
निकट दीप की लौ से उसने
उनको धीरे सुलगाया।

'यह क्या? अरे! तमस्सुक मेरा'
कह नवाज तब चिल्लाए।
कागज राख बन गए पल में,
वे कुछ भी बोल न पाए।

'हाँ! हुजूर ऋण से विमुक्त हैं,
यह है मेरी दीवाली!'
कहा सेठ ने; उसके मुख पर
थी अपूर्व इक उजियाली।

बस, नवाज ने सिर झुका लिया,
दृग में आँसू भर आए।
है इन्सान खुदा का बन्दा,
यह वे तनिक समझ पाए।

किसी समय बंगाल में एक बहुत बड़ा मेला लगा था। मेले में बहुत से लड़के आए थे जो मन-चाही चीजें खरीद कर मजे से खा रहे थे। उनमें सात बरस का एक लड़का शिवजी की एक मूर्ति खरीद कर, कंधे पर रखे, घर की ओर जा रहा था। अचानक राह में एक दुर्घटना हुई। चौराहे पर एक गाड़ी वेग से आ रही थी। एक लड़का गाड़ी को देखे बिना सामने से दौड़ता आया और गाड़ी के नीचे गिर गया। वह घायल और खून से लथ-पथ हो गया। राहगीरों ने उसे देखा और एक आह भर कर अपनी राह पकड़ी। किसी ने उस लड़के की कोई मदद न की। शिवलिंग ले जाने वाले लड़के ने जब यह देखा तो उसने लिंग को दूर फेंक दिया और दौड़ कर लड़के को उठाया। उसने अपनी धोती फाड़ कर उसका खून पोंछा और घावों पर पट्टी बाँधी। यह सब करके जब वह शिव-लिंग उठाने गया तो देखता क्या है कि उसके टुकड़े टुकड़े हो गए हैं। यह देख कर एक बूढ़े ने उस लड़के से कहा—'बच्चे! शिव-लिंग तो टूट गया। अब घर जाकर तुम किसकी पूजा करोगे?' 'लिंग टूट गया तो क्या हुआ? मैंने उस लड़के की जान तो बचा दी!' लड़के ने जवाब दिया। उसकी बात सुन कर सब लोग चकित रह गए और सोचने लगे—'यह लड़का बड़ा ही होनहार मालूम होता है।' जानते हो, वह लड़का कौन था? वही आगे चल कर स्वामी विवेकानंद के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

भोला-भाला

रामू एक छोटा सा लड़का था जिसकी उम्र अभी दस बरस की भी न हुई थी। पर वह था बड़ा चालाक। बचपन में ही बेचारे का बाप स्वर्ग सिधार गया था। वह उसके लिए एक छोटी सी झोंपड़ी और एक गाय छोड़ गया था। उस गाय से रामू को बड़ा प्रेम था। उसका दूध बेच कर माँ-बेटा अपना गुजारा कर लेते थे। उस गाय से रामू को इतना प्रेम था कि वह खुद भूखा रह जाता। लेकिन जिस दिन गाय का पेट न भरता तो उसे बड़ा दुःख होता। किंतु अब दिन बदल गए। जब पेट भरना ही मुश्किल हो गया तो फिर गाय कैसे पाली जाए? एक दिन शाम को रामू घास की गठरी सिर पर रखे घर लौट रहा था। इतने में उसने देखा कि दो आदमी एक गाय को हाँक कर ले जा रहे हैं। नजदीक आने पर देखा कि वह उसके पड़ोसी सुंदरलाल जी की गाय है। यह देख कर रामू को बड़ा अचरज हुआ। यह जानने की बड़ी इच्छा हुई कि वे कौन हैं और उस गाय को कहाँ हाँके ले जा रहे हैं। इसलिए वह उनके पीछे लग गया। उन दोनों ने उस गाय को ले जाकर गाँव के जमींदार साहब की गोठ में बाँध दिया। रामू ने उनके पास जाकर पूछा—'यह गाय तो सुंदरलालजी की है न? इसे यहाँ क्यों ले आए हो?' 'यह गाय गाँव में सब के खेत चरती फिरती है। अब क्या किया जाय?' उन्होंने कहा। 'ओह! यह बात है!' कह कर रामू अपने घर चला गया। इसके बाद वह रोज किसी न किसी समय

महीधर

जमींदार साहब की गोठ के पास आता और देखता कि सुंदरलाल जी की गाय को चारा-पानी दिया जा रहा है या नहीं। यह सब देख कर उसके मनमें तरह तरह के विचार आने लगते। एक दिन वह रोज़ की तरह अपनी गाय को चराने के लिए गाँव के बाहर ले गया। वहाँ जाकर वह एक पेड़ की छाँह में बैठ गया और गाय को चरने के लिए छोड़ दिया। बीच में कब उसकी आँख लग गई, मालूम नहीं। लेकिन जब उसकी आँख खुली तो देखा कि गाय का कहीं पता नहीं है। वह तुरंत दौड़ कर जमींदार साहब की गोठ की तरफ गया। देखा कि उसकी गाय भी सुंदरलाल जी की गाय की बगल में बँधी है। यह देख कर रामू को पहले तो बड़ा दुख हुआ। लेकिन इतने में उसके मन में एक विचार पैदा हुआ। उसने सोचा—'मेरी गाय जमींदार साहब की गोठ में बँधी हुई है। एक तरह से यह भी अच्छा ही हुआ। क्योंकि अब मुझे उसके लिए चारे-पानी की चिंता नहीं करनी होगी। मेरी गाय आराम से है। बस, मुझे और क्या चाहिए?' उसने सोचा। जब थोड़ी देर में वह अपने घर गया तो माँ ने पूछा—'गाय कहाँ रे!' 'एक जगह आराम से है। अब हमें उसके बारे में कोई फिक्र न करनी पड़ेगी। अब हम अपना पेट भरें, यही काफी है।' उसने जवाब दिया। 'क्या कहता है तू? अपनी गाय की फिक्र हम न करेंगे तो और कौन करेगा? कौन उसे पालेगा? अगर कोई उसे पाल भी लेगा तो इससे हमें क्या मिलेगा? जो पालेगा, वही उसका दूध भी दुह लेगा। इससे

हमें क्या फायदा होगा?' उसकी माँ ने पूछा। 'यह सब मैं तुम्हें पीछे बताऊँगा।' रामू ने कहा। उसकी माँ चुप रह गई। उसी दिन रामू ने जमींदार साहब की गोठ में जाकर वहाँ नौकरों से कहा—'क्या मुझे भी यहाँ कोई काम मिलेगा?' 'जाओ! जमींदार साहब से पूछो!' उन्होंने कहा। रामू तुरंत जमींदार साहब के पास गया और नौकरी के लिए बिनती की। 'अरे तू तो निरा छोकरा है! तू क्या काम करेगा? तुझे क्या वेतन मिलेगा?' जमींदार ने कहा। 'मुझे काम करने दीजिए! मैं वेतन-ऊतन कुछ नहीं माँगता।' रामू ने कहा। जमींदार साहब ने उसकी बात मान ली।

दूसरे दिन सबेरे रामू कलेवा करके जमींदार साहब की गोठ में काम करने गया। इतने में जमींदार साहब क्रोध से गरजते हुए वहाँ आए। उनके पीछे रोती-धोती रामू की माँ भी आई। रामू को देखते ही जमींदार ने गरज कर कहा—'अरे! तो, मुझे ही चकमा देने चला तू? एक तो तू दूसरों का

खेत चराता है। और दूसरे मुझे धोखा देख कर मेरी ही गोठ में नौकरी करने आता है?' उन्होंने आँखें तरेर कर कहा। 'इस बार माफ कर दीजिए! बाबू! आगे वह ऐसा नहीं करेगा!' रामू की माँ रो-धो कर गिड़गिड़ाने लगी। 'अच्छा! तो जुर्माना चुका कर गाय को हाँक ले जाओ।' जमींदार ने कहा। 'हुजूर! आप मुझे जो दंड चाहे दीजिए! लेकिन जुर्माना न डालिए! हम लोग गरीब हैं।' रामू ने उनसे कहा। 'अच्छा! तो इसे छः बेंत लगाओ!'

जमींदार ने अपने नौकरों की तरफ घूम कर कहा। रामू ने अपने हाथ पसारे। एक नौकर ने बेंत लगाना शुरू किया। चार बेंत खा कर रामू बेहोश होकर गिर पड़ा। थोड़ी देर बाद उसे होश आया तो उसने बाकी बेंत खाने के लिए हाथ पसारे। लेकिन यह देख कर जमींदार का हृदय पिघल गया। उसने कहा—'ठहरो!' वह रामू को अपने साथ घर ले गया। 'क्या इस तरह धोखा देना तुम्हें उचित था?' थोड़ी देर बाद जमींदार ने रामू से पूछा। 'हजूर! मैंने जान-बूझ कर उस गाय को दूसरों के खेत में छोड़ नहीं दिया था। मेरे अभाग्य से ऐसा हो गया। इसका मुझे बहुत दुख है। लेकिन फिर मैंने सोचा कि वह आपकी गोठ में आराम से है। मेरे घर पर तो उसे भर-पेट चारा भी नहीं मिलता। यह सोच कर कुछ संतोष हुआ। लेकिन गाय को छोड़ कर मैं एक क्षण भी नहीं रह सकता था। इसलिए मैंने बिना वेतन के भी आप के यहाँ नौकरी करने की ठान ली। अब आप कहते हैं कि जुर्माना देकर गाय ले जाओ! हमारे लिए तो पेट भरना ही मुश्किल हो गया है। हम गाय को कैसे पालें?' रामू ने जवाब दिया। 'रामू! तू कितना भोला-भाला है? क्या तू सोचता है कि हम तेरी गाय को पालते रहेंगे? अच्छा जा! आज से तू मेरे यहाँ नौकरी कर ले। अपनी गाय हमारी गायों के साथ पलने दे। तू ही सब को चरा लाया कर!' जमींदार ने मुसकुरा कर रामू से कहा। उन्हें उस पर दया आ गई थी। उस दिन से रामू जमींदार का नौकर बन गया। अब उसे किसी तरह की तकलीफ न रही।

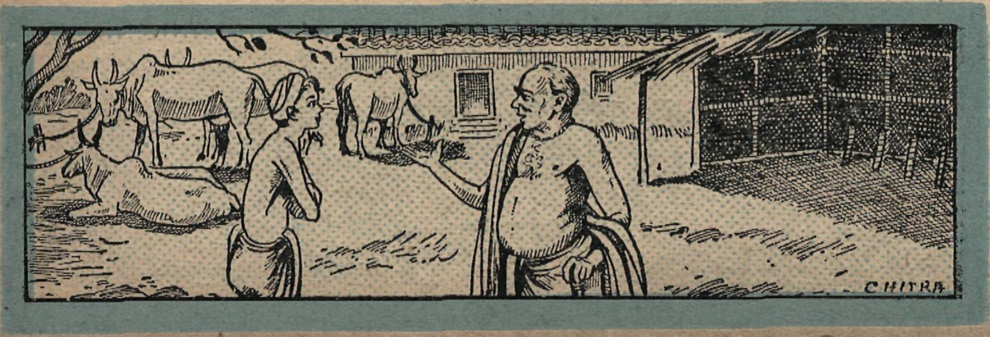

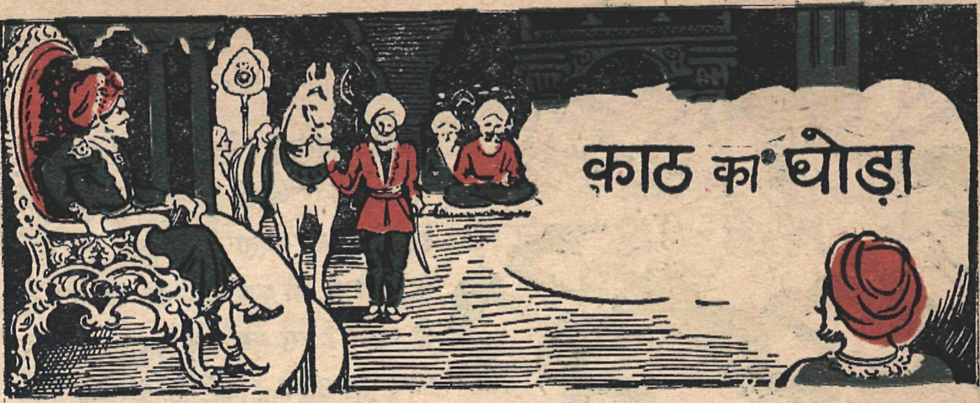

लोग कहते हैं कि किसी समय कहीं एक नवाब था। उसके एक ही लड़का और एक लड़की थी। लड़का बड़ा बहादुर था। किसी से नहीं डरता था। उसका नाम था फिरोजशाह। लड़की बड़ी खूबसरत थी। उसका नाम था जहानारा। वह नवाब हर साल एक बड़ा जलसा करता था। वह जलसा देखने के लिए देश-देश के नामी-गिरामी लोग, शाहजादे, शायर, नट-कथक, और गुणी-गवैये आते रहते थे। नवाब के सामने वे अपना जौहर दिखलाते और ईनाम पाते थे। एक साल एक बूढ़ा आदमी उस जलसे में आया। अनेक शिल्पी अनेक तरह की बोलने, चलने और किस्म-किस्म की करामात दिखलाने वाली प्रतिमाएँ लाए थे। लेकिन वह बूढ़ा सिर्फ एक काठ का घोड़ा ले आया था। उस बूढ़े को और उसके घोड़े को देख कर सभी लोग हँसने लगे। 'वह घोड़ा तुम्हीं ने बनाया है दादा!' एक आदमी ने पूछा। 'कैसा बढ़िया घोड़ा है? क्या दाम है इसका?' दूसरे ने हँसी उड़ाई। 'भई! क्या समझ रखा है उस घोड़े को तुमने? वह देवताओं का घोड़ा है!' एक ने कनखी मार कर कहा। 'दादा! वे सब तुम्हारी हँसी उड़ा रहे हैं। लेकिन मैं सच पूछता हूँ। बताओ, इसका दाम क्या है?' एक ने गंभीर-भाव से पूछा। अब उस बूढ़े शिल्पी को गुस्सा आ गया। उसने कहा—'इस घोड़े को तुम क्या—तुम्हारे बाप-दादे भी नहीं खरीद सकते! जाओ! अपनी राह

3

इसकी करामात देख लेंगे।' उस बूढ़े ने कहा। 'अच्छा! चलो! मैं अभी इसकी जाँच करता हूँ। तुम इस घोड़े के बारे में जो कुछ कहते हो वह सच है, तो जाओ! इस पर चढ़ कर मेरा एक काम कर लाओ। यहाँ से दस कोस दूर पर काला पहाड़ है। उस पर एक मसजिद है। उस मसजिद की बगल में

लो!' उसने झिड़क दिया। कुछ दिन बाद नवाब ने उन शिल्पियों की बनाई हुई हरेक मूर्ति को देखा और उन्हें उचित पुरस्कार देकर कुछ को खरीद लिया। आखिर बूढ़ा और उसका काठ का घोड़ा बच गए। 'इस घोड़े में क्या करामात है?' नवाब ने बूढ़े से पूछा। 'हुजूर! गौर से सुनिए! यह ऐसा-वैसा घोड़ा नहीं है। पलक मारते यह आसमान में उड़ जाता और तारों से बातें करने लगता है।' उस बूढ़े ने नवाब से कहा। 'वाह! वाह! भई! आकाश-पाताल के कुलाबे मत मिलाओ; ऐसा घोड़ा तो सारी दुनिया में कहीं नहीं पाया जाता है!' नवाब ने अचरज के साथ कहा। 'हुजूर! जरा सब्र करें तो अभी अभी

एक खजूर का पेड़ है। जाओ, उस खजूर की एक पत्ती तोड़ लाओ जिससे मुझे तुम्हारी बातों पर विश्वास हो सके!' नवाब ने हुकुम दिया। बंदगी करके बूढ़ा घोड़े पर चढ़ गया और उसके सिर पर की कलंगी उतार दी। घोड़ा उड़ा और मेघों में मिल कर ओझल हो गया। घोड़ा कैसे, कब वहाँ से उड़ा, कहाँ गया और कब आया, यह किसी को मालूम नहीं हुआ। लेकिन दूसरे ही क्षण वह बूढ़ा नवाब के सामने आकर फिर खड़ा हो गया। उसके हाथ में नवाब की माँगी हुई पत्ती थी। यह देख कर नवाब दंग रह गया। उसको अपनी आँखों पर आप ही विश्वास न हुआ। उसने सोचा—'किसी न किसी तरह यह घोड़ा

बूढ़े से ले लेना चाहिए।' यह सोच कर उसने बूढ़े से कहा—'तुम यह घोड़ा मुझे दे दो और उसके बदले में जो चाहो माँग लो।' 'अच्छा! तो इस घोड़े के बदले आप अपनी लड़की से मेरा ब्याह कर दीजिए।' उस बूढ़े कारीगर ने निधड़क कहा। यह सुन कर सब लोग भौंचक रह गए। क्योंकि वह कारीगर बहुत ही बूढ़ा था। तिस पर ऐसा बदसूरत था कि जो उसका चेहरा एक बार देख लेता, फिर कभी भूल न जाता। ऐसे आदमी से देखते देखते नवाब साहब की सोलह साल की लड़की को कैसे ब्याहा जाए? नवाब भी सोच में पड़ गया। तब शाहजादे फिरोजशाह ने कारीगर से कहा—'हमें कैसे विश्वास हो कि इस घोड़े में कुछ माया नहीं है? कैसे मालूम हो कि वह दूसरों के चढ़ने पर भी उसी तरह उड़ता है कि नहीं! हमें सच कैसे मालूम हो? इसलिए मुझे एक बार इस पर चढ़ कर जाँच कर लेने दो!' तब बूढ़े ने भी शाहजादे की बात मान ली। तुरंत शाहजादे ने उस घोड़े पर चढ़ कर कलँगी उतार ली। घोड़ा उठा और पल मारते ही आसमान में ग़ायब हो गया। नवाब और दरबारी लोग देखते ही रह गए। वे लोग फिरोजशाह के लौटने की राह देखते हुए वहीं बैठे रहे। धीरे धीरे दोपहर हो गई। लेकिन शाहजादा लौट कर न आया। आखिर शाम भी हो गई। लेकिन उसका कहीं पता न था। आखिर रात भी हो गई।

देखा कि वह कितनी ऊँचाई पर आ गया है। लेकिन नीचे देखने पर उसे कुछ भी दिखाई नहीं दिया। यहाँ तक कि उसका वह किला भी नहीं दिखाई दिया। सिर्फ काला पहाड़ साँप की एक बाँबी के समान दिखाई दे रहा था। उसके सर में चक्कर आ गया। उसने घोड़े को कस कर पकड़ लिया। लेकिन घोड़ा तो उड़ा ही चला जा रहा था। तब फिरोजशाह को अपने घर वालों की याद आने

तब नवाब को बहुत गुस्सा आया। उसने सोचा—'यह कारीगर घोड़ा न ले आता तो मेरा बेटा इस तरह गायब न हो जाता।' इसलिए उसने कहा—'इस बूढ़े को ले जाकर बंदीखाने में डाल दो। जब शाहजादा लौट कर आएगा तो देखा जाएगा।' तुरंत सिपाहियों ने उस बूढ़े कारीगर को ले जाकर बंदीखाने में बंद कर दिया। उधर फिरोज-शाह उस काठ के घोड़े पर वायु-वेग से उड़ा जा रहा था। पहले तो उसे यह देख कर बड़ा डर लगा। उसने नीचे झाँक कर

लगी। बाप याद आया जिसने बड़े प्यार से पाला-पोसा था, बहन याद आई जो हमेशा उसके साथ खेला करती थी; अपने यार-दोस्त भी याद आए। क्या अब वह फिर उन्हें नहीं देख सकता? वह डर से काँपने लगा। उसने आँखें बंद कर लीं। लेकिन घोड़ा तो ऊँचा ही उठता जा रहा था। घबड़ा कर उसने आँखें खोलीं। लेकिन तब तक वह भूल गया कि घोड़ा कैसे नीचे उतरता है। वह भारी सोच में पड़ गया! घोड़े को टटोल कर देखने लगा कि कहीं कोई कील-काँटी तो नहीं है

जिसके दबाने से वह नीचे उतरने लगेगा। लेकिन उसे कहीं कुछ न मिला। तब उसने घोड़े के अंग-अंग को हिला-डुला कर देखा। लेकिन कोई फायदा न हुआ। आखिर झुँझला कर वह कलँगी—जो उसके हाथ में थी—घोड़े के सर में जोर से घुसा दी। बस, कलँगी लगते ही घोड़ा नीचे उतरने लगा। तब कहीं उसकी जान में जान आई। उसने कलँगी को जरा और दबाया तो घोड़ा और भी वेग से नीचे उतरने लगा। आखिर घोड़ा एक सतमंजिले महल के ऊपर उतरा। तब तक रात हो गई थी। सारे शहर में सन्नाटा छाया हुआ था। फिरोजशाह सीढ़ियों से उतर कर महल के अंदर पहुँचा। कहीं से गाने-बजाने की आवाज आ रही थी। वह उस आवाज की ओर चला और एक बड़े कमरे में जा पहुँचा। वह कमरा हीरे-जवाहरों से जड़ा हुआ था और रोशनी में चम-चम कर रहा था। उसने अंदर जाकर देखा कि एक फूल से मुलायम रेशमी गद्दे पर एक सुंदरी लेटी हुई है। उसके चारों ओर उसकी सहेलियाँ सो रही हैं। फिरोजशाह को अपनी आँखों पर विश्वास न हुआ। उसे ऐसा लगा जैसे वह कोई सपना देख रहा हो। उसने अपने बदन में चिकौटी काट कर देखा। जब दरद हुआ तो समझा कि सब कुछ सच है। उसने फिर उस सुंदरी की ओर देखा। वह सितारों के बीच चाँद की तरह मालूम पड़ती थी। उसके सुगंधित बाल लहरा रहे थे। फिरोज ने जाकर धीरें से उसके बाल अपने हाथ में ले लिए। सुंदरी ने चौंक कर आँखें खोल दीं। फिरोजशाह ने धीरे से उसको अपनी सारी कहानी कह सुनाई। उसने उससे बिनती की कि वह उसके मुल्क में आकर उससे ब्याह कर ले। वह सुंदरी भी उस पर रीझ गई थी। इसलिए वह भी चुपके से उठी और उसके साथ हो गई। दोनों उस घोड़े पर सवार होकर फिरोजशाह के मुल्क में जा उतरे। फिरोजशाह नहीं चाहता था कि शहर के सब लोगों को शाहजादी

की बात मालूम हो। इसलिए उसने शाहजादी को नगर के बाहर एक बाग में उतार दिया और खुद अपने महल में आ गया। लड़के को देख कर नवाब की खुशी का ठिकाना न रहा। उसने तुरंत हुक्म दिया कि कारीगर बंदीखाने से छोड़ दिया जाए। उसने तुरंत शाहजादे के ब्याह की तैयारियाँ भी शुरू कर दीं। यह सारा हाल उस बूढ़े कारीगर को भी मालूम हुआ। वह तुरंत शहर के बाहर वाले बाग में पहुँचा और सुंदरी से बोला—'शाहजादे ने आपको जादू के घोड़े पर चढ़ा कर महल में ले आने का हुक्म दिया है।' शाहजादी ने भी उसकी बातों पर विश्वास कर लिया। वह उस घोड़े पर उसके पीछे बैठ गई। तुरंत कारीगर ने कलँगी उतारी और घोड़ा हवा से बातें करने लगा। जब शाहजादी के स्वागत के लिए नवाब साहब गाजे-बाजे के साथ बाग में हाजिर हुए तो कारीगर की बात मालूम हो गई। यह खबर सुनते ही फिरोजशाह पागल सा हो गया। शाहजादी के बिना वह जी नहीं सकता था। इसलिए वह घोड़े पर चढ़ कर उसे खोजने निकला। कारीगर का घोड़ा उड़ते-उड़ते यूनान मुल्क के एक मैदान में उतरा। तब शाहजादी कारीगर की चालाकी जान गई और रोने लगी। उसी समय यूनान का राजा उधर से शिकार खेलने जा रहा था। उसने शाहजादी के रोने की आवाज सुनी। तुरंत दौड़ कर वह उसके पास पहुँचा और उसकी रक्षा की। शाहजादी पर वह रीझ गया। इस नई बला से बचने के लिए वह पागल बन गई। यह देख कर यूनान के राजा को बहुत रंज हुआ। उसने अनेकों हकीमों को बुला कर उसकी दवा कराई। लेकिन कोई फायदा न हुआ। इधर शाहजादा

फिरोजशाह उसकी खोज में देश-विदेश घूम रहा था। लेकिन कहीं उसे शाहजादी का सुराग़ न मिला। आखिर वह घूमते-घामते यूनान जा पहुँचा। वहाँ उसे शाहजादी के पागलपन का पता चला। झट फिरोजशाह ने हकीम का भेष बनाया और राजा के पास जाकर कहा—'हुजूर! मैं अनेकों जड़ी-बूटियाँ जानता हूँ। मैं शाहजादी का पागलपन दुरुस्त करूँगा।' राजा उसकी बातें सुन कर बहुत खुश हुआ। वह उसे तुरंत शाहजादी के पास ले गया। इस निराले हकीम को देखते ही शाहजादी का मिजाज जरा ठंडा हुआ। 'हुजूर! एक काठ के घोड़े के कारण इस शाहजादी का मिजाज यों खराब हो गया है। उसी तरह के घोड़े पर चढ़ा कर मंतर-जंतर करना होगा। मुझे उस तरह का घोड़ा तैयार करने में दस बरस लग जाएँगे।' फिरोजशाह ने शाहजादी की जाँच करके राजा से कहा। 'वैसा घोड़ा तो हमारे पास

है। तैयार करने की क्या जरूरत है? उस पर चढ़ कर इसका इलाज करो!' राजा ने उससे कहा। फिरोजशाह की चाल काम कर गई। उसने शाहजादी को घोड़े पर चढ़ा कर कुछ झूठ-मूठ के मंत्र पढ़े। फिर उचक कर वह भी घोड़े पर सवार हो गया और कलँगी उतार ली। तुरंत घोड़ा फुर्र से उठा और आसमान में गायब हो गया। फिरोजशाह शाहजादी के साथ अपने मुल्क में पहुँचा। बड़ी धूम-धाम से उन दोनों का ब्याह हुआ। ब्याह के दिन ही उस काठ के घोड़े को जला दिया गया। वे दोनों सुख से रहने लगे।

पेट के लिये

एक राजा था। नगेन उसका एक नौकर था। वह बड़ा हँसोड़ था। अपनी बातों से वह रोज राजा को हँसाया करता था। इसलिए राजा उसे बहुत चाहता था। राजा के पास नौकर थे और रानी के पास नौकरानियाँ थीं। नौकरानियों में से एक का नाम था चंद्रिका। वह भी नगेन की तरह ही रानी का मन बहलाया करती थी। इसलिए रानी भी उसे बहुत चाहती थी। एक दिन राजा और रानी में बहस उठी कि नगेन और चंद्रिका इन दोनों में कौन ज्यादा होशियार है? राजा नगेन का पक्ष लेता था और रानी चंद्रिका का। दोनों में बहुत देर तक वाद-विवाद होता रहा। लेकिन कुछ तय न हो सका। आखिर दोनों ने मंत्री को बुला भेजा और आने पर उससे पूछा—'मंत्रिवर! नगेन और चंद्रिका में कौन ज्यादा होशियार है?' 'दोनों एक-पर-एक हैं।' मंत्री ने खूब सोच-विचार कर जवाब दिया।

कुछ दिन बाद रानी ने मंत्रीजी को बुला कर कहा—'मंत्रीजी! चंद्रिका बड़ी हो गई है। उस का ब्याह कर देना चहिए। उसके लिए योग्य वर ढूँढ़ लाने की जिम्मेदारी आप पर है।' कुछ दिन बाद राजा ने भी मंत्री से कहा—'मंत्री! नगेन के लिए एक योग्य लड़की चाहिए।' तब मंत्री ने राजा से कहा कि 'नगेन के योग्य वधू चंद्रिका ही है।' फिर रानी से जाकर कहा—'चंद्रिका के योग्य वर नगेन है।' इस तरह दोनों को राजी कर के मंत्री ने बड़ी धूम-धाम से दोनों का ब्याह करवा दिया। ब्याह तो हो गया। लेकिन कुछ दिनों बाद वे दोनों बड़ी मुश्किल में पड़ गए। गिरस्ती चलाने में रुपया हाथ में आते ही गायब हो जाता था। दोनों ने ब्याह के पहले जो रुपया बचा कर रखा था वह भी चुक गया। आखिर भूखों मरने की नौबत आ

विनोद कुमार

गई। तब दोनों ने दिमाग लड़ा कर एक उपाय सोच निकाला। दूसरे दिन चंद्रिका उठते ही बाल बिखेर कर, रोती-धोती, छाती पीटती रानी के घर गई और कहने लगी—'रानीजी! क्या कहूँ? मेरा सुहाग लुट गया! मैं कितनी सुखी से आप के यहाँ रहती थी? लेकिन वे दिन तो अब चले गए! हाय! चार दिन की चाँदनी हो गई! अब मुझे कौन देखे-भालेगा?' रानी ने उसकी बातों पर विश्वास कर लिया और आँखों में आँसू भर कर कहा—'अब रोने से क्या फायदा? चंद्रिका! किसने सोचा था कि तुम्हारा भाग्य ऐसा होगा? तुम्हारी भलाई के ख्याल से हमने यह ब्याह कराया था। खैर, अब जो होना था सो तो हो गया!' इस तरह रानी ने उसे ढाढ़स बँधाया और अशर्फियों की एक पोटली देकर उसे घर भेज दिया। ज्यों ही वह अशर्फियाँ लेकर घर पहुँची त्यों ही नगेन ने उसे छाती से लगा लिया और बार-बार उसकी चतुरता की तारीफ की। 'अब जरा देखना! मैं क्या करता हूँ?' यह कह कर वह उठा और रोते रोते राजा के पास गया। राजा उसे देखते ही भौंचक रह गया—'अरे नगेन! माजरा क्या है? इस तरह रोता क्यों है?' उसने कहा। 'क्या कहूँ? हुजूर! मैं तो लुट गया। घर की लक्ष्मी मुझे छोड़ कर चली गई। इतने दिन निश्चिंत हो कर अकेले जी रहा था। आप के कहने से मैंने ब्याह किया। अब देखिए, मैं लुट गया हूँ। जो रुपया बचा रखा था सब दवा-दारू में खर्च हो गया!' नगेन ने सिर पीट कर कहा। यह सुन कर राजा ने भी उसकी बातों पर विश्वास कर लिया और उसे धीरज बँधा कर, एक हजार अशर्फियाँ देकर घर भेज दिया। उसके जाने के बाद राजा ने सोचा कि चंद्रिका के

अभाव में रानी सोच में पड़ गई होगी। इसलिए उसे तसल्ली देने के लिए रनवास में गया। 'बेचारी चंद्रिका कितनी हँसमुख थी? हमेशा खुद हँसती रहती थी और दूसरों को भी हँसाती थी!' रानी को देखते ही राजा ने समवेदना प्रगट करना शुरू किया। 'हाँ, हाँ, उस अभागे से ब्याह करके मैंने ही उसका सिंदूर मिटा दिया। मंत्री के कहने से मैंने जल्दी-बाजी की। नहीं तो पहले किसी ज्योतिषी को दिखा कर उसकी आयु जान लेनी थी!' रानी ने जवाब दिया। उसकी बात सुन कर राजा अचरज में डूब गया। 'यह क्या? मर गई चंद्रिका! इसमें नगेन की आयु कैसे कम हो गई?' उन्होंने पूछा। 'वाह! वाह! यह आप से किसने कहा कि चंद्रिका मर गई है! शायद वह मर जाती तभी अच्छा होता। बेवा होकर जीने से तो मर जाना ही अच्छा होता! बेचारी को मैंने बहुत तसल्ली देकर अशर्फ़ियों की एक थैली भी दे दी!' रानी ने कहा। 'यह तो बड़ा गजब है! अभी तो मैं नगेन को एक हजार अशर्फ़ियाँ देकर आ रहा हूँ। वह

रोते-धोते आया था कि चंद्रिका के मरने से उसको बहुत दुख हो रहा है! और तुम कहती हो कि नगेन मर गया है!' राजा ने पूछा। 'हाँ! मैं जानती हूँ कि नगेन ही मर गया है!' रानी ने कहा। 'ऐसा कभी नहीं हो सकता। चंद्रिका मर गई है।' राजा ने कहा। इस तरह दोनों में थोड़ी देर तक बहस होती रही। आखिर राजा ने एक नौकर को यह जानने भेजा कि दोनों में से कौन पहले मर गया है। राजा के नौकर को देखते ही नगेन ने चंद्रिका को लिटा दिया और ऊपर एक चादर ओढ़ा कर बगल

में बैठ कर रोने-धोने लगा। यह देख कर नौकर उलटे पाँव लौट गया और राजा से जाकर कहा कि चंद्रिका ही मर गई है। उसकी बात सुन कर रानी को बहुत गुस्सा आया। उसे नौकर पर विश्वास न हुआ। इसलिए उसने सत्य जानने के लिए अपनी नौकरानी को भेजा। चंद्रिका पहले ही जानती थी कि इस बार एक दासी उसे देखने आएगी। इसलिए उसने नगेन को लिटा कर एक चादर ओढ़ा दी और खुद बगल में बैठ कर रोने-धोने लगी। दासी यह देख कर लौट गई और रानी से जाकर कहा कि नगेन ही मर गया है। यह सुनते ही राजा को शक हुआ और वह रानी के साथ खुद ही नगेन के घर की ओर चला। राजा-रानी के आने की बात जान कर चंद्रिका और नगेन दोनों चादर ओढ़ कर लाशों की तरह पड़े रहे। 'अपनी पत्नी के शोक से पागल होकर नगेन भी जहर पीकर मर गया होगा।' राजा ने यह देख कर निश्चय किया। 'नहीं, नहीं! अपने पति के शोक से पतिव्रता चंद्रिका ही जहर पीकर मर गई होगी।' रानी ने कहा। अब दोनों में फिर बहस होने लगी। 'इन दोनों में कौन पहले मर गया है, यह बताने वाले को मैं एक जागीर दूँगा।' आखिर झुँझला कर राजा ने कहा। नगेन चट से उठ कर राजा के पैरों पर गिर पड़ा और बोला—'हुजूर! पहले मैं ही मर गया हूँ।' चंद्रिका उससे क्या कम थी? उसने भी झट उठ कर रानी के पैरों पर गिर कर कहा—'देवी! पहले मैं ही मर गई हूँ!' लेकिन देखने वालों ने पूछा—'तुम दोनों मरने का बहाना क्यों कर रहे थे?' 'उदर निमित्तं बहुकृत वेषम्।' नगेन ने जवाब दिया। 'भूखे भजन न होइ गुपाला।' चंद्रिका ने कहा। यह सुन कर सब लोग हँस पड़े। राजा ने नगेन को एक जागीर दे दी।

कपूत

वनगाँव में गौरी नाम की एक गरीब औरत रहती थी। वह खूब मेहनत करती थी। चीथड़े पहने हुए कोई ठठरी आपको कहीं दिखाई दे, तो समझ लीजिए कि वही गौरी है। सचमुच उसको इस तरह मेहनत करते देख कर सब लोगों को अचरज होता। वह तड़के कितने बजे उठती, किसी को मालूम नहीं होता। लेकिन छः-सात घरों में झाड़ने बुहारने का काम कर आती। फिर दूध दुह कर छः-सात घरों में बेच लेती। वह कुछ घरों में जाकर रसोई भी कर देती। वहाँ उसे खाना मिल जाता। दोपहर को धान कूटने जाती और चावल-खुद्दी ले आती। साँझ को गाँव के बाहर जाकर जलावन के लिए सूखी लकड़ियाँ और कंडे चुन लाती। फिर कहीं से गोबर लाकर उपले पाथती। उसे इस तरह मेहनत करते देख कर लोग आपस में कहने लगते—'गौरी क्यों इतनी मेहनत करती रहती है? इस तरह उपले बना कर, लकड़ियाँ बेच कर और हरदम दूसरों की गुलामी करके रुपए कमा कर वह क्या करेगी?' बहुत से लोग नहीं जानते कि उसके जयपाल नाम का एक लड़का है और उसी के लिए गौरी इतनी मेहनत करती है। गौरी की एकमात्र इच्छा थी कि जयपाल बड़ा होकर नाम कमाए और बाप-दादों का नाम रोशन करे। इसलिए वह आधे पेट खाकर, चीथड़े पहन कर दिन काटती और हमेशा मेहनत करती रहती। इस तरह गौरी अनेकों कष्ट झेल कर लड़के को पाल-पोस रही थी। लेकिन माँ के लाड़-प्यार से लाभ उठा कर जयपाल ने खूब खर्च करना शुरू कर दिया था। खुद भूखी रह कर भी उसकी माँ उसे

सुन्दरी बाई

भरपेट, मनचाही चीज़ें खिलाती। अच्छे अच्छे कपड़े पहनने को देती। लेकिन जयपाल को इस बात का ध्यान न रहता कि उसी के कारण माँ को इतना कष्ट उठाना पड़ रहा है। इसलिए उसे मितव्यय का ख्याल न रहता। वह खूब खर्च करता। फिर भी, लड़के को इस तरह खर्च करते देख कर भी गौरी उसे कुछ न कहती। वह सोचती—'बड़े होने के बाद वही सीख लेगा।' इस तरह वह बड़े धीरज के साथ उसका सब उत्पात सह लेती। लेकिन ज्यों-ज्यों उसकी उमर बढ़ती गई, त्यों-त्यों जयपाल का खर्च भी बढ़ता गया। लेकिन था वह बड़ा तेज। मैट्रिक में वह अव्वल दर्जे में पास हुआ। इससे उसकी माँ को और भी खुशी हुई। वह और भी मेहनत करके रुपए कमाने लगी। और चार बरस बाद जयपाल बी. ए. पास हो गया। अब उसकी माँ की खुशी का ठिकाना न रहा। उसने सोचा—'अब और क्या है? मेरा लड़का बड़ी नौकरी करेगा। खूब रुपए कमाएगा। तब मुझे मेहनत करने की जरूरत न रहेगी। मेरे सारे संकट टल जाएँगे।'

वनगाँव के जमींदार बाबू रामचरण लखपति थे। हर साल हजारों की आमदनी थी। लेकिन कोई ऐसा न था जो उनकी जमीन-जायदाद सम्हालता। इससे उनको बड़ा नुकसान होता। इसलिए वे बहुत दिनों से अपने मित्रों से कहते आ रहे थे कि उन्हें एक विश्वास-पात्र आदमी चाहिए, जो उनका सारा काम-काज सम्हाल सके। रामचरण के दोस्त बाबू श्यामलाल बहुत से उम्मेदवार ले आए। लेकिन कोई उन्हें

पसंद न आया। तब उन्होंने जयपाल को उनके सामने लाकर खड़ा किया। जयपाल देखने में भलामानुस मालूम होता था। तिस पर हाल ही में बी. ए. पास किया था। इसलिए उसे देखते ही रामचरण को खुशी हुई। उन्होंने सोचा कि आज उनके लायक आदमी मिला है। लेकिन जमीन-जायदाद का मामला था। जरा सोच-विचार कर काम लेना था। इसलिए रामचरण ने तय किया कि खुद जाकर उसका हाल-ढाल देख आएँ। वे जयपाल के घर चले। घर के बाहर गौरी उपले पाथ रही थी। एक भले आदमी को आया देख उसने जयपाल को पुकारा। जयपाल बाहर निकला और रामचरण को अंदर ले गया। कमरे की सफाई-सुथराई देख कर रामचरण को बहुत अचरज हुआ। सब चीज़ें करीने से रखी हुई थीं। उन्होंने खुश होकर कहा—'कल सबेरे तुम दफ्तर में आकर मुझसे मिलो!' बातें करके दोनों घर से बाहर आए। रामचरण के साथ-साथ जयपाल भी कुछ दूर गया। घर के बाहर उपले पाथती,

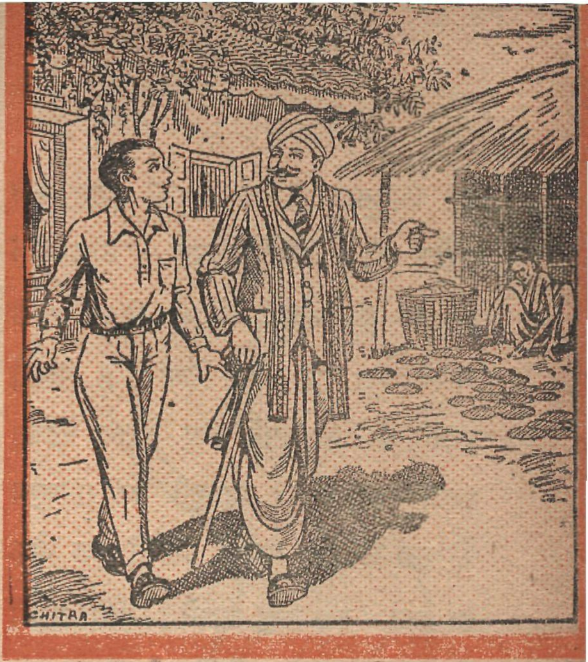

फटे-हाल गौरी की ओर उँगली उठा कर रामचरण ने पूछा—'यह कौन है?' जयपाल को यह बताने का साहस न हुआ कि यह उसकी माँ है। इसलिए अचानक उसके मुँह से निकल पड़ा—'यह मेरी नौकरानी गौरी है।' रामचरण ने उसकी बात सच मान ली। दूसरे दिन श्यामलाल अपने दोस्त रामचरण से मिले। रामचरण ने अपना इरादा उन्हें जता दिया। उन्होंने कहा—'मैं जयपाल को दो सौ रुपए वेतन पर अपना मेनेजर बना रहा हूँ।' यह सुन

कर श्यामलाल ने भी उनकी बहुत बड़ी तारीफ की। उन्होंने कहा—'ठीक है! जयपाल को नौकरी देने का निश्चय करके आपने बड़ा ही पुण्य किया है। बेचारी उसकी माँ गौरी उसके लिए कितना मेहनत करती रहती है!' यह सुन कर रामचरण को कुछ याद आ गया। उन्होंने कुछ चौंक कर कहा—'क्या कहा आपने? गौरी उसकी माँ है? वह कहाँ रहती है? चलिए! एक बार उसे देख आएँ!' 'क्या आपने गौरी को नहीं देखा? वह तो हमेशा अपने घर के बाहर ही उपले पाथती रहती है। आपकी नजर जरूर उस पर पड़ी होगी!' श्यामलाल ने कहा। 'तो क्या वह उसकी माँ थी!' यह कह कर रामचरण मौन रह गए। थोड़ी देर बाद उन्होंने अपनी मुलाकात का सारा हाल श्यामलाल से बता दिया। ठीक समय पर जयपाल बड़े ठाठ-बाट से सज-धज कर रामचरण के दफ्तर में आया और दरबान के हाथ अपना विजिटिंग कार्ड भेज दिया। दरबान ने लौट कर कहा—'बाबूजी आपसे नहीं मिलना चाहते।' यह कह कर एक कागज का पुर्जा उसके हाथ में डाल दिया। जयपाल ने चकित होकर वह पुर्जा खोला। उसमें लिखा था—'जो अपनी माँ को नहीं पहचानता, वह दुनिया में और किसे पहचानेगा? मुझे तुम्हारी कोई जरूरत नहीं। तुम जा सकते हो।' जयपाल लज्जा से कट गया और अपना-सा मुँह लेकर चुपचाप चला गया।

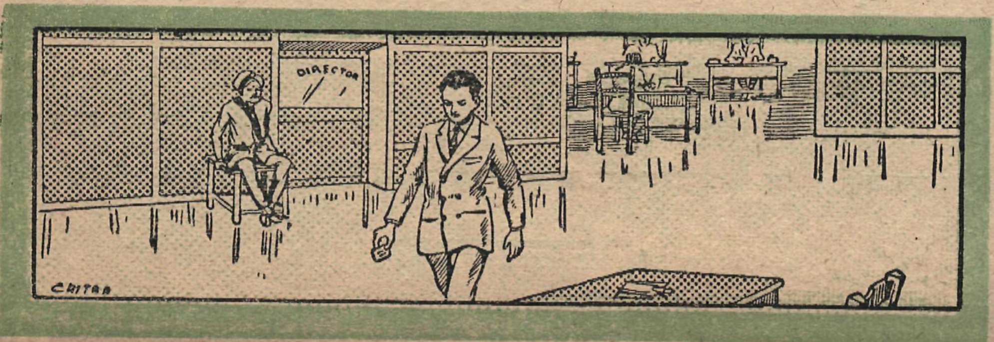

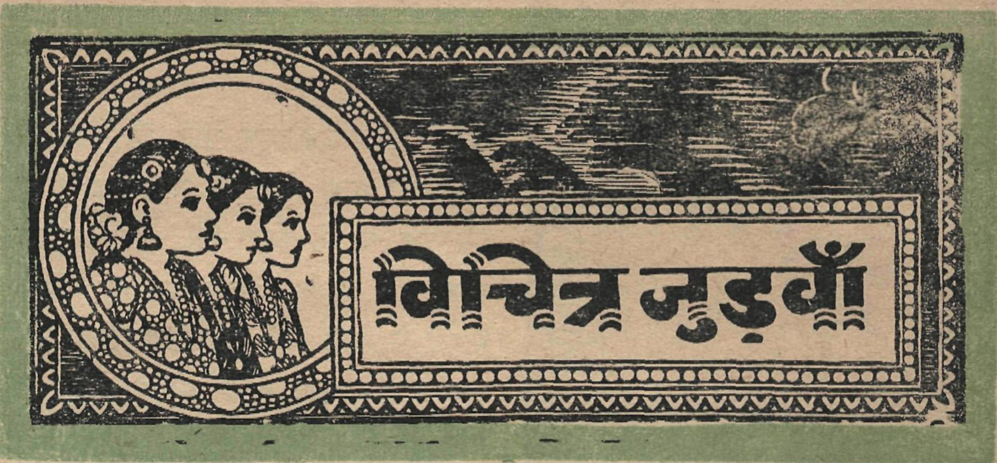

6

[अपनी प्यारी बेटियों, सुहासिनी, सुभाषिणी और सुकेशिनी को ढूँढ़ लाने वाले को आधा राज देने की जो घोषणा राजा ने का, उसे सुन कर भद्रपुर के जुड़वाँ भाई उदय, निशीथ और प्रदोष के आने और राजकुमारियों को ढूँढ़ने के लिए चल देने, इत्यादि का वर्णन आपने पिछले महीने में पढ़ा। अब इस महीने में आगे को कहानी पढ़िए !]

अपने सफेद घोड़े पर सवार होकर उदय आगे आगे चल रहा था। दिन होने के कारण उदय को देखने में कोई तकलीफ न थी। लेकिन निशीथ और प्रदोष की क्या हालत थी ? वे तो दिन में आखें रहते भी अंधे थे न ? इसलिए वे आगे जाने वाले उदय के घोड़े की टाप पर कान रखे चले आ रहे थे। धीरे धीरे सूरज डूबने लगा। 'अब तुम्हारी बारी है। आओ, प्रदोष ! राह दिखाओ !' उदय ने पुकारा। झट प्रदोष आगे आया और राह दिखाने लगा। निशीथ और उदय उसके पीछे पीछे चलने लगे। यों जाते जाते रात हो आई और वे तीनों एक घने जंगल में जा पहुँचे। अँधेरा होने के कारण अब प्रदोष और उदय को आराम करना चाहिए था। लेकिन उस आधी रात को, उस जंगल में वे कहाँ आराम करते ? तब निशीथ ने उन दोनों को एक पेड़ पर बिठा दिया और कहा—'तुम दोनों यहाँ रहो ! मैं जाकर रात काटने लायक कोई जगह ढूँढ़ आता हूँ।' यह कह कर उसने उन दोनों के घोड़ों को उसी पेड़

से बाँध दिया और खुद काले घोड़े पर सवार होकर चला। निशीथ इस तरह बहुत दूर जाकर आखिर जंगल के बीचों-बीच एक उजड़े मकान के नजदीक पहुँचा। उसने दरवाजा खटखटाया। लेकिन किसी ने कोई जवाब नहीं दिया। उसने खिड़की के नजदीक जाकर अंदर झाँका। अंदर कोई नहीं था। तब उसने धक्का मार कर किवाड़ खोला और अंदर प्रवेश किया। सारे घर में सन के गट्ठरों के ढेर लगे हुए थे। उनके अलावा उस घर में कोई अजीब बात न थी। वह थोड़ी देर तक वहाँ ठहरा जिससे घर में रहने वाले आ जाएँ तो उनसे बात कर ले। लेकिन जब बहुत समय बीतने पर भी कोई नहीं आया तो उसने निश्चय कर लिया कि इस घर में कोई नहीं रहता। उसने सोचा कि मकान अच्छा है। वह अपने भाइयों के साथ वहाँ रात काट सकता है। इसलिए फिर अपने काले घोड़े पर सवार हो गया और जिस पेड़ पर उदय और प्रदोष थे, उसकी ओर चला। उधर निशीथ के चले जाते ही प्रदोष और उदय को पेड़ के नीचे कोई आहट सुनाई दी। उन्होंने सोचा—'जंगल है। शायद कोई जानवर आ गया होगा।' इसलिए वे उसकी ओर ध्यान न देकर निशीथ के लौट आने की राह देखने लगे। थोड़ी देर बाद उदय ने अपनी कमर टटोल कर देखी। उसे ऐसा लगा जैसे कोई सन के रेशे लिपट गए हों। उसने प्रदोष से यह बात कह दी। तुरत प्रदोष ने कहा—'हाँ! हाँ! ऐसी कोई चीज़ मेरी कमर में भी लिपट गई है। क्या है यह?' वे अपना दिमाग लड़ा ही रहे थे कि उन्हें ऐसा लगा जैसे कोई दोनों की कमर से रस्सी बाँध कर खींच रहा हो। उन्होंने अपने चारों ओर टटोल कर देखा। लेकिन कोई आदमी न

दिखाई पड़ा। इतने में उन्हें किसी की आवाज सुनाई दी—'बड़े-बड़े बहादुर भी मुझे न देख सके। तुम लोग क्या देखोगे ?' ज्यों ही ये बातें सुनाई दीं त्यों ही उदय और प्रदोष ने जान लिया कि किसी भूत या प्रेत ने उन दोनों को रस्से से जकड़ लिया है। लेकिन उन्हें न सूझा कि क्या करें ? 'अभी हमारा भाई निशीथ यहाँ नहीं है। नहीं तो हम तुम्हारी खूब खबर लेते। अच्छा, अब भी कुछ बिगड़ा नहीं है। हमारा भाई आता ही होगा। अगर तुम अपना भला चाहते हो तो तुरंत यहाँ से भाग जाओ। नहीं तो वह तुम्हें सीधे यमपुरी भेज देगा।' उन्होंने उस अदृश्य भूत को धमकाया। लेकिन उनका दुश्मन भी कोई मामूली आदमी नहीं था। उसने कहा—'अरे भई ! इन बंदर-घुड़कियों से यहाँ कोई डरने वाला नहीं। तुम्हारे भाई की क्या बात, वैसे सौ आदमी भी मेरा बाल-बाँका न ीं कर सकते। लेकिन मैं उस के आने तक यहाँ थोड़े ही ठहरा रहूँगा !' यह कह कर वह व्यक्ति उन दोनों को अपनी

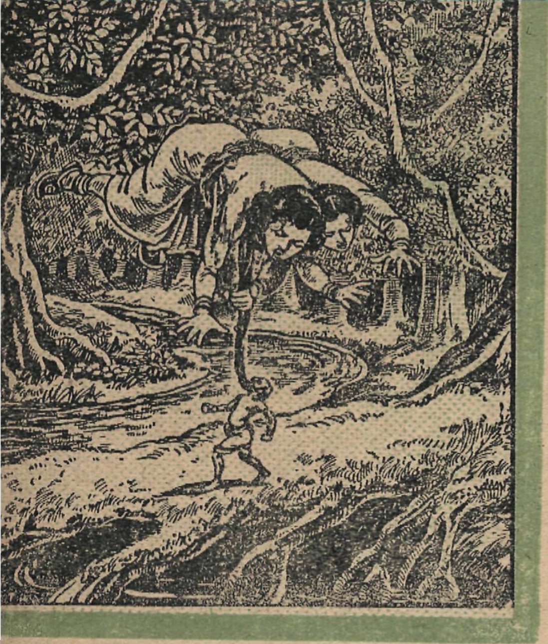

कर उसे ढूँढ़ने चल दिए हैं। इसलिए वह उन दोनों को ढूँढ़ता हुआ अपने काले घोड़े पर सवार होकर, सारे जंगल में घूमने लगा। लेकिन कहीं उनका पता न चला। तब तक तीन पहर रात बीत चुकी थी। और दो घंटों में सवेरा होने वाला था। सवेरा होने पर वह खुद अंधा हो जाता और एक कदम भी आगे न बढ़ सकता। इसलिए उसने और एक बार सारा जंगल छान डाला। लेकिन कोई फायदा न हुआ। आखिर उसके मन में एक विचार उठा। 'कहीं वे भी उस उजड़े घर की ओर तो नहीं चले गए?' उसने सोचा। तुरंत वह घोड़े को दौड़ाते हुए उस घर की ओर लौट पड़ा। उसने सोचा कि दोनों भाइयों के घोड़े बाहर ही बँधे होंगे। लेकिन वहाँ पहुँचने पर जब घोड़े नहीं दिखाई पड़े तो उसे निराशा हुई। लेकिन उसने सोचा—'जब यहाँ तक आ ही गया हूँ तो एक बार अंदर जाकर देख क्यों

दाढ़ी से बाँध कर ले चला। वास्तव में वह एक बौना था और दोनों भाइयों को जिस चीज़ से बाँध रखा था वह उसकी दाढ़ी ही थी। जाते जाते उसने दोनों घोड़ों पर कोई बुकनी झोंक दी जिससे वे तुरंत छू-मंतर हो गए। थोड़ी देर बाद निशीथ ने उस पेड़ के नजदीक आकर देखा तो उसके भाइयों और उनके घोड़ों का कहीं पता न था। उसे न सूझा कि बात क्या हुई। उसने सोचा—आने में देर होने के कारण शायद वे दोनों पेड़ से उतर कर, अपने घोड़ों पर सवार हो

न लूँ ?' वह किवाड़ में धक्का देकर अंदर चला गया। आश्चर्य! एक सन के रस्से से बँधे हुए उदय और प्रदोष अंदर सो रहे थे! उनके नजदीक ही जमीन पर खून के धब्बे भी दिखाई पड़े। यह कैसा भीषण कृत्य था! उदय का एक हाथ ऐसा गायब था कि उसके कटने की कहीं निशानी न थी। यह सब देख कर निशीथ का दिमाग चकरा गया। उसने अपने आपको सम्हाल कर दोनों भाइयों को जगाया। निशीथ को देखते ही उन दोनों की जान में जान आ गई। 'भैया! तुम उस दुष्ट के हाथों से बच कर कैसे आए? हमें तो फिर कभी मिलने की आशा ही न रह गई थी।' यह कह कर दोनों ने निशीथ को गले से लगा लिया और आँसू बहाने लगे। 'डरो नहीं! तुम दोनों यहाँ कैसे आ गए? बात क्या हुई थी? यह रस्सी कैसी? भैया! तुम्हारा हाथ कहाँ गया? ये खून के बूँद कैसे आए?' निशीथ ने प्रश्नों की झड़ी लगा दी। 'यह सब हमारी बदनसीबी नहीं तो क्या? तुम्हारे जाने के बाद किसी ने हमें बाँध कर इस घर में लाकर डाल दिया। हम अँधेरे में न जान सके कि वह दुष्ट कौन है और हमें कहाँ ले जा रहा है? हम सबेरा होने की राह देखने लगे। जब सबेरा होने लगा तो मुझे कुछ कुछ दिखाई देने लगा। हमें जिसने लाकर यहाँ रखा, वह एक अजीब आदमी था। उसे देख कर हमें हँसी भी आई और गुस्सा भी

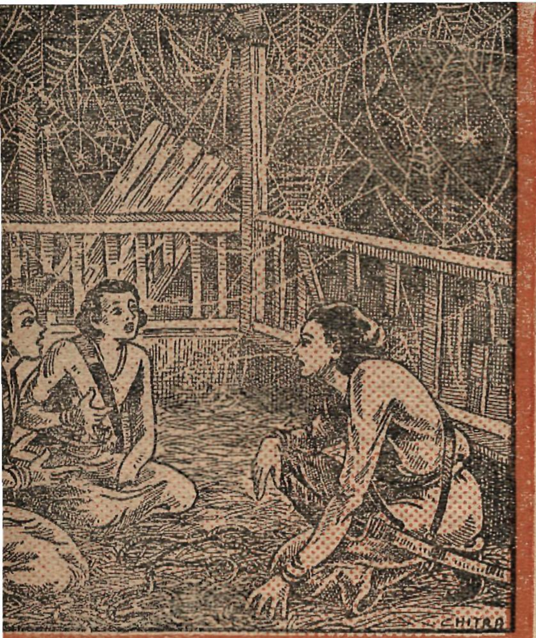

हुआ । वह ठीक बारह अंगुल लंबा आदमी था । लेकिन उसकी दाढ़ी गजों लंबी थी । उसने उस दाढ़ी को हमारी कमर में लपेट कर हमें बाँध लिया । वह अभी तक हमारी बगल में ही सो रहा था । अभी वह कहीं गया है । उसने जमीन पर तुम्हारे पैरों की निशानी देखी । 'मालूम होता है, तुम्हारा भाई भी यहाँ आया था । ठहरो, उसे भी पकड़ लाता हूँ !' यह कह कर वह गुस्से में वहाँ से उठ कर जाने लगा । लेकिन वह जल्दी में भूल गया था कि हम उसकी दाढ़ी से बँधे हुए हैं । मुझे गुस्सा आ गया तो मैंने दाढ़ी के कुछ बाल नोच लिए । बस, उसकी दाढ़ी से खून टपकने लगा । तब उसने आँखों से आग उगलते हुए कहा—'अच्छा ! तेरी यह हिम्मत ! देखना ! तुझे कैसा मजा चखाता हूँ ? मेरी इस दाढ़ी में मेरी जान रहती है । तूने अभी इसके कुछ बाल उखाड़ लिए । अब ये बाल फिर कब पैदा होंगे ? अच्छा, ले ! मैं तुझे इस बदमाशी की सजा देता हूँ ।' यह कह कर उसने अपनी जेब से कोई बुकनी निकाली और बाँह पर मल दी । बस, मेरी बाँह गायब हो गई । इसके बाद उसने अपनी दाढ़ी कतर डाली । इस तरह हम बँधे ही रहे और वह दूर चला गया । लेकिन सब से अजीब बात यह थी कि उसकी दाढ़ी कतरते ही फिर ज्यों की त्यों हो गई ।' यह कह कर दोनों भाइयों ने किस्सा खतम किया । यह सब सुनकर निशीथ को बहुत अचरज हुआ ।

इतने में सबेरा हो गया। तब उदय ने कहा—'अब देर क्यों की जाए? वह तुम्हें खोज कर अब लौट कर आता ही होगा। भाई निशीथ! सबेरा हो गया। इसलिए अब तुम्हें तो दिखाई नहीं देगा। तुम कुछ नहीं कर सकोगे। इसलिए मेरे बदले तुम रस्सी से बँध जाओ। होशियारी के साथ इस तरह बैठे रहो जिसमें तुम्हारा एक ही हाथ उसे दिखाई दे। पीछे जो होगा, देखा जाएगा।' दोनों भाइयों को उसकी बात जँच गई। निशीथ ने उठ कर दोनों के बंधन खोल दिए। उदय ने निशीथ को प्रदीप के साथ बाँध दिया। उसने बाहर जाकर निशीथ के काले घोड़े को थोड़ी दूर ले जाकर एक खोह में छिपा दिया। फिर लौट कर उस उजड़े घरके नजदीक एक झाड़ी में छिप कर बैठ गया। दोपहर के समय वह लंबी दाढ़ी वाला बौना झाड़ी में छिपे हुए उदय के नजदीक

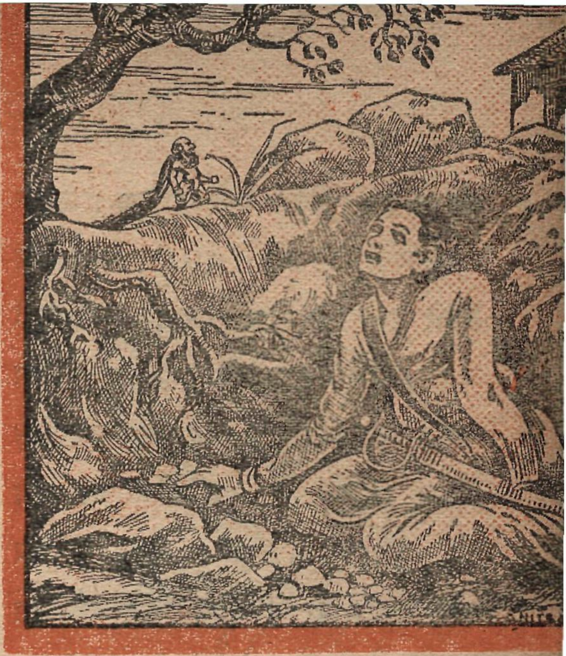

से ही गुजरा। वह भन-भनाता हुआ जा रहा था—'अच्छा! देखूँगा, वह मुझसे बच कर जाएगा कहाँ? आज नहीं तो कल जरूर पकड़ा जाएगा।' उदय ने उसको घर में घुसने दिया। फिर एक खिड़की के नजदीक जाकर झाँक कर देखने लगा कि वह अंदर क्या कर रहा है? उसने एक विचित्र दृश्य देखा। उस लंबी दाढ़ी वाले बौने ने अपनी जेब से कोई बुकनी निकाल कर निशीथ और प्रदीप पर छिड़क दी। तुरंत वे दोनों ऐसे छू-मंतर हो

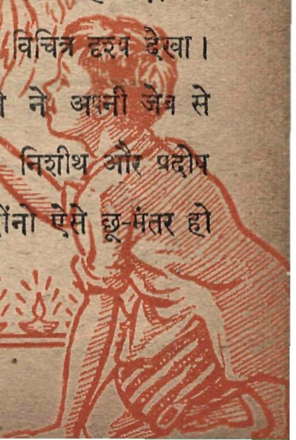

गए कि नामो-निशान नहीं रह गया। उसके बाद उसने अपने गले से एक हार निकाल कर टँगनी पर लटका दिया। बस, उसकी दाढ़ी लापता हो गई और वह एक मामूली आदमी बन गया। खिड़की में से उदय यह सब देख रहा था। थोड़ी देर बाद बौना लेट गया और खुर्राटे भरने लगा। मौका देख कर उदय ने उस घर में प्रवेश किया और उस हार को चुरा कर अपने गले में डाल लिया। बस, उदय भी लंबी दाढ़ी वाला बौना बन गया। यह परिवर्तन देख कर उदय को हँसी आ गई। उसने सोचा—'तो सारा रहस्य इसमें छिपा हुआ है!' इसके बाद उसने अपनी जेबें टटोल कर देखीं। एक जेब में सफेद बुकनी भरी हुई थी। दाढ़ी वाले ने इसी बुकनी से पेड़ के नीचे घोड़ों और घर में उसके भाइयों को गायब कर दिया था। दूसरी जेब में लाल अंजन की एक डिबिया थी। उसने उसके जरिए उदय का हाथ गायब कर दिया था। तीसरी जेब में उसी तरह के हरे अंजन की डिबया, एक तौलिया और एक तरह की काली बुकनी की पुड़िया थी। इनका क्या प्रयोजन है, यह उदय की समझ में न आया।

[दाढ़ी वाले का रहस्य जान लेने के बाद उदय उन करामाती बुकनियों के जरिए क्या कर सका? क्या उतने से उस बौने ने उसका पिंड छोड़ दिया? आदि बातें अगले अंक में पढ़िए।]

किसी समय एक गंदा लड़का था। सफाई किस चिड़िया का नाम है। वह यह भी जानता न था। बदन पर मैल जमा हुआ रहता था। कपड़ों पर स्याही के धब्बे भरे रहते थे। वह चाहे कितने ही अच्छे कपड़े क्यों न पहने, दूसरे ही क्षण गंदे हो जाते थे। मुँह कभी नहीं धोता था। नहाने से कन्नी कटाता रहता था। एक दिन उसके कमरे में एक परी ने आकर कहा—'देखो तो, तुम्हारा कमरा कितना गंदा है? जमीन पर धूल जमी हुई है। जहाँ देखो वहीं किताबें फर्श पर बिखरी हैं। तुम्हारा बिछौना कितना मैला है? छिः! तुम्हारा कमरा अभी साफ करना चाहिए। जाओ! बाहर जाकर थोड़ी देर तक अपने भाई के साथ खेलो!' उस परी ने कहा। 'मेरे कोई भाई नहीं है।' गंदे लड़के ने जवाब दिया। 'तुम्हारे भाई क्यों नहीं? जरूर है। शायद तुम उसे नहीं जानते। लेकिन वह तुम्हें जानता है। बाहर जाकर खड़े हो जाओ। वह तुम्हें जरूर दिखाई देगा।' उस परी ने कहा। 'देखूँगा, तुम्हारी बात कहाँ तक सच है?' यह कहते हुए गंदा लड़का बाहर चला गया। थोड़ी देर बाद पास के पेड़ से एक गिलहरी उतरी। 'गिलहरी! गिलहरी! क्या तुम्हीं मेरे भाई हो?' गंदे लड़के ने उससे पूछा। 'क्या कहा? जरा मेरी ओर देखो! मैं कितनी साफ हूँ? मेरा घोंसला देखो! मेरे बाल-बच्चों को देखो! हम तुम्हारी तरह कभी गंदगी बर्दाश्त नहीं कर सकते।' यह कह कर गिलहरी वहाँ से चली गई। थोड़ी देर बाद उधर से एक

आलोक मित्र

मैना उड़ती हुई आ गई। ' मैना! मैना! क्या तुम्हीं मेरे भाई हो?' गंदे लड़के ने पूछा। 'मेरी अभी इतनी बदकिस्मती नहीं कि मैं तुम्हारा भाई बन जाऊँ। जरा मेरी ओर देखो! मैं कितनी साफ हूँ। मेरी देह पर कहीं जरा सी मैल दिखा सकते हो?' मैना ने कहा। यह कह कर वह गुस्से में वहाँ से उड़ गई। थोड़ी देर में उधर से एक बिल्ली आई। 'म्याऊँ! म्याऊँ! क्या तुम्हीं मेरे भाई हो?' गंदे लड़के ने पूछा। 'वाह! वाह! क्या सवाल किया तुमने? जानते हो, आज सवेरे से अब तक मैं छः बार नहा चुकी हूँ। कोई तुम्हें देखेगा तो मेरी हँसी भी उड़ाएगा कि यह कैसा भाई मिला तुम्हें?' यह कह कर बिल्ली दुम हिलाती हुई वहाँ से चली गई। थोड़ी देर बाद उधर से एक सूअर जाने लगा। उसके बदन पर गंदगी की मोटी मोटी तहें जमी हुई थीं। लड़के ने उसे देख कर घृणा से मुँह फेर लिया। उसने उससे अपना सवाल नहीं किया। लेकिन सूअर लड़के को देख कर रुक गया। 'क्यों भैया!' कह कर उसने लड़के को पुकारा।

'कौन तुम्हारा भाई है यहाँ ? भागो यहां से !' लड़के ने जवाब दिया। 'वाह ! वाह ! तुम मेरे भाई क्यों नहीं हो ? तुम तो मेरे सगे भाई हो। जरा अपनी ओर नज़र डालो, और फिर मेरी ओर देखो ! बराबर पाते हो न ? यहीं नजदीक में एक गंदा गढ़ा है। मैं उसमें लोटने जाता हूँ। आओ मेरे साथ !' सूअर ने कहा। 'छि: ! मैं कीचड़ में क्यों लोटने लगा ?' लड़के ने जवाब दिया। 'मेरे सामने शेखी न बघारो ! क्या तुमने मुझे अंधा समझ लिया है ? आओ ! मेरे साथ चल कर तुम भी आराम से कीचड़

में लोटो !' सूअर ने न्यौता दिया। 'मैं नहीं आऊँगा !' यह कह कर वह लड़का रोने लगा। इतने में उस परी ने बाहर, उस लड़के के पास आकर कहा—'मैंने तुम्हारा कमरा साफ कर दिया है। फिर उसे गंदा न कर देना ! क्यों, तुम अपने सूअर भाई के साथ जाओगे कि मेरे साथ अंदर चलोगे ?' 'मैं तुम्हारे साथ अंदर चलूँगा।' यह कह कर लड़के ने परी का हाथ ज़ोर से पकड़ लिया। 'जाओ ! तुम्हारे जाने से मेरा कोई नुकसान नहीं !' यह कह कर सूअर वहाँ से चला गया।

शीसे का बेर

किसी किसान के तीन लड़कियाँ थीं। उनमें छोटी सबसे खूबसूरत थी। उसका नाम सुंदरी था। वह रूप में ही नहीं, गुणों में भी सुंदरी थी। लेकिन उसकी बड़ी बहनें बड़ी खोटी थीं। वे सारा काम सुंदरी से करातीं। तिस पर हमेशा उसको डाँटती रहती थीं। इतना ही नहीं, वे भोली-भाली सुंदरी को 'पगली' कह कर पुकारती थीं। लेकिन सुंदरी सब कुछ बर्दाश्त करती जाती थी। एक दिन उनके पिता ने शहर जाते वक्त उनको बुला कर पूछा कि 'तुम तीनों को क्या चाहिए?' बड़ी लड़की ने एक सुंदर माला माँगी। मँझली ने रेशमी साड़ी माँगी। 'मुझे एक चाँदी की थाली और एक शीसे का बेर चाहिए।' सुंदरी ने माँगा। पिता के जाने के बाद उसकी दोनों बड़ी बहनें बड़ी उतावली के साथ उसके लौटने की राह देखने लगीं। लेकिन सुंदरी घर का सारा काम-काज करती, माँ की सेवा-टहल में लगी रही। एक हफ्ते बाद उनका पिता लौटा। दरवाजे पर उसकी आहट पाते ही सुंदरी की दोनों बहनें जाकर उससे लिपट गईं। लेकिन सुंदरी पिता के पैर धोने के लिए पानी ले आई और हाथ में तौलिया लिए खड़ी रही। 'बेटी! तुम्हारी माँगी हुई चीज़ों को खोजने के लिए मुझे सारा बाजार छान डालना पड़ा। लेकिन अंत में मिल गईं।' पिता ने सुंदरी से कहा। 'हाय! मैंने अपने पिता को नाहक कष्ट दिया।' सुंदरी ने सोचा। 'ये चीज़ें क्या करोगी बेटी!' उसके पिता ने पूछा। 'मैं इस शीसे के बेर को इस चाँदी की थाली में रख

कुमारी श्यामा

कर घिसूँगी।' सुंदरी ने जवाब दिया। 'पगली बिटिया! यह भी कोई काम है!' उसकी बात सुन कर पिता ने हँस दिया। बड़ी लड़की ने माला पहन ली। मँझली ने रेशमी साड़ी पहन ली। दोनों बहुत खुश थीं। सुंदरी शीसे के बेर को चाँदी की थाली में घिसने लगी। थोड़ी देर बाद सुंदरी को उस थाली में सारा संसार दिखाई देने लगा। गद्दियों पर बैठे राजा लोग, समुंदर में सफ़र करते हुए जहाज, अनेक नगरों के बड़े बड़े महल, सब उसकी आँखों के सामने चित्र की तरह दिखाई देने लगे। उन्हें देख कर सुंदरी को बहुत आश्चर्य हुआ और वह बहुत आनंदित हुई। उसका आनंद देख कर उसकी दोनों बहनें मन ही मन जलने लगीं। उनके मन में हुआ कि किसी तरह वह बेर और वह थाली हड़प लें। इसलिए बड़ी बहन ने उससे कहा—'बहन! मेरी माला लो और वे चीज़ें मुझे दे दो!' मँझली ने कहा—'बहन! मेरी रेशमी साड़ी ले लो और अपनी चीज़ें दे दो!' लेकिन सुंदरी ने इन्कार कर दिया। अब डाह ही नहीं, मन ही मन दोनों को उस पर गुस्सा भी हुआ। 'अब इससे माँग कर कोई फायदा नहीं। हम इसको मार डालेंगी तो वे चीज़ें आसानी से हमारे हाथ लग जाएँगी।' दोनों बहनों ने एक दूसरे से कहा और एक षड्यंत्र रचा। दूसरे दिन दोनों ने सुंदरी को बुला कर कहा—'बहन! हम दोनों वन में फल तोड़ने जा रही हैं। वे सब हमीं ढोकर नहीं ला सकतीं। इसलिए तुम भी हमारे साथ आओ!' सुंदरी ने उनकी बात मान ली और तीन टोकरियाँ अपने

हाथ लेकर उनके साथ चली। जाते समय उसने अपनी चाँदी की थाली और शीसे का बेर पिता को रखने के लिए दिए। तीनों बहनें बड़ी देर तक चलती रहीं और आखिर जंगल पहुँचीं। थोड़ी देर तक फल तोड़ने के बाद दोनों बहनों ने सुंदरी से पूछा—'तुम्हारी दोनों चीज़ें कहाँ हैं? हमें दे दो!' तब सुंदरी ने जवाब दिया कि वे उसके पास नहीं हैं। लेकिन बहनों ने उसकी बातों पर विश्वास न किया। उन्होंने सोचा कि वह झूठ बोल रही है। इसलिए उन्होंने एक कुल्हाड़ी से उसे मार डाला। लेकिन जब थाली और शीसे का बेर नहीं मिले तो वे निराश होकर घर पहुँची और झूठ-मूठ रोने-धोने लगीं। 'जंगल में एक भेड़िया घूम रहा था। शायद वही सुंदरी को उठा ले गया। हमने उसे बहुत ढूँढ़ा। लेकिन कहीं पता न चला।' उन्होंने अपने माँ-बाप से कहा। उनके माँ-बाप बहुत रोए यह सुन कर। कुछ दिन बाद एक ग्वाले का लड़का अपनी भटकी भेड़ को ढूँढ़ते हुए जंगल में उस जगह पहुँचा, जहाँ सुंदरी मारी गई थी। वहाँ उसे झाड़ियों में एक विचित्र पौधा दिखाई दिया। देखने में वह बाँस की तरह दीखता था। लेकिन उस पर सुंदर नीले फूल खिल रहे थे और लाल फल लगे हुए थे। ग्वाले ने उस पौधे को तोड़ लिया। उसने सोचा कि इसमें छेद करके वह बाँसुरी की तरह बजाएगा। लेकिन वह नली उसके होठों से लगते ही गाने लगी—'बज री बंशी! बज री बंशी! मात-पिता की जय कह बंशी! बड़ी और मँझली बहनों ने, वन

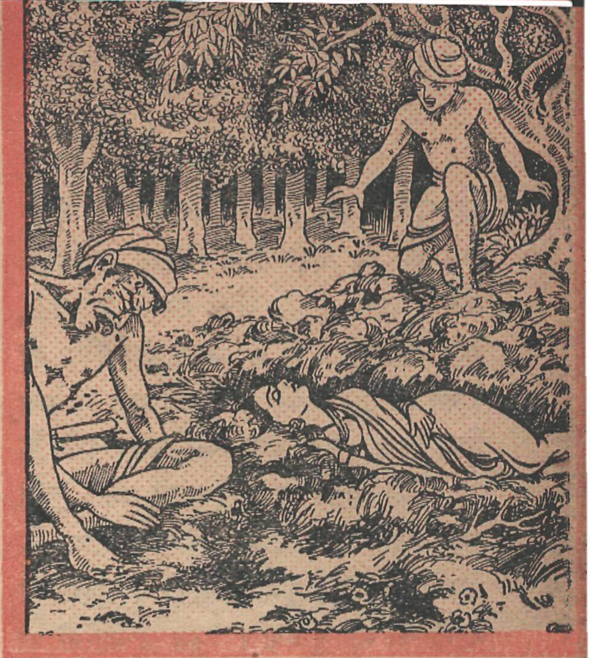

में फल तोड़ने बुला कर, थाली और बेर के हित ही, मुझे मार डाला इस थल पर!' तब ग्वाले का लड़का यह विचित्र बंशी लेकर गाँव की ओर दौड़ा। गाँव के लोगों ने भी बड़े अचरज से यह विचित्र गाना सुना। 'हाय! बेचारी! किन सत्यानाशिनों ने उसे मार डाला!' सब आपस में कहने लगे। आखिर यह बात उस किसान के कानों में भी पहुँची। सुन कर उसकी आँखों में आँसू आ गए। उसने तुरंत ग्वाले के लड़के के पास जाकर कहा—'मुझे वह जगह जरा दिखाओ जहाँ तुम्हें बंशी मिली थी!' दोनों मिल कर उस जगह गए। उस जगह उस पौधे की जड़ से अब भी यही गाना सुनाई दे रहा था। जब किसान ने उस जगह खोदा तो उसे अपनी छोटी लड़की सुंदरी गड़ी हुई दिखाई दी। उसे देखने से ऐसा मालूम होता था जैसे वह अभी सो रही हो; मरी नहीं हो! किसान माथा पीट कर रोने लगा। तब उस पौधे की जड़ से उसे यह गाना सुनाई देने लगा—

'राजा के लोटे का पानी, लाकर मुझ पर छिड़कोगे तो, तुरत उठ खड़ी हो जाऊँगी, मैं फिर जल्दी जी जाऊँगी!' यह गाना सुन कर किसान के मन को कुछ तसल्ली हुई। उस ग्वाले के लड़के को वहीं छोड़ कर, वह तुरंत दौड़ा दौड़ा राजा के पास गया और सारी बात उससे कह सुनाई। तब राजा ने कहा—'इसमें क्या रखा है? मेरे लोटे का पानी जरूर ले जाओ! हाँ, तुम्हारी लड़की जब जी जाए तो जरा उसे लाकर हमें दिखा देना!' आनंद के साथ

वह पानी लेकर किसान उलटे पाँव जंगल गया और वह पानी अपनी बिटिया पर छिड़क दिया। तुरंत सुंदरी आँखें मलती हुई उठी, जैसे अभी वह नींद से जागी हो। पिता को देखते ही उसने रोते हुए उसे गले से लगा लिया। यह सब देख कर उस ग्वाले के लड़के की आँखों से आँसू बहने लगे। तुरंत सुदरी को साथ लेकर किसान राजा के सामने जा खड़ा हुआ। राजा ने सुंदरी की बहनों को भी बुलाया। 'इन हत्यारिनों को जीने नहीं देना चाहिए। आज सूरज डूबने के पहले ही इन दोनों को मार डालो!' राजा ने उन बहनों को उनके पाप का दंड दिया। फिर उसने सुंदरी से कहा—'चाँदी की थाली और शीसे का बेर कहाँ हैं? लाओ, मुझे दिखाओ!' तब किसान ने वे दोनों चीज़ें ला दीं। सुंदरी ने दोनों चीज़ें राजा की भेंट कर दीं। राजा को उस थाली में अनेक तमाशे दिखाई दिए। जब अपनी बेटी के साथ घर लौटने के लिए किसान राजा से इजाजत लेने लगा तो राजा ने उससे कहा—'तुम्हारी बिटिया की दोनों चीज़ें राजाओं के पास रहने लायक हैं। तुम्हारी बिटिया रानी बन कर किले में रहने लायक है।' यह बात सुन कर सुंदरी ने शरम से सिर झुका लिया और कहा—'लेकिन मेरी एक इच्छा है। इस आनंद के समय मैं अपनी बहनों को कोई दंड दिलाना नहीं चाहती।' राजा ने उसकी बात मान कर उसकी बहनों को माफ कर दिया। शुभ समय पर राजा के साथ सुंदरी का ब्याह बड़ी धूम-धाम से हुआ। इससे सबको खुशी हुई। तब से किसान अपने परिवार के साथ किले में आकर रहने लगा। यह सब कुछ हुआ उस ग्वाले के लड़के के जरिए न? इसलिए सुंदरी कभी उसे नहीं भूली। उसने उसको खूब इनाम-अकराम दिया और बराबर भाई की तरह देखती रही।

राम और रावण की लड़ाई खतम हो गई है। संसार को सताने वाला, दस सिर वाला रावण और उसकी सेना नष्ट हो गई है न? भगवान रामचन्द्र अपनी सेना के जय-जयकार के साथ सुख के सागर में स्नान कर रहे हैं। हाँ, तो भगवान रामचन्द्र की सेना कैसी थी? बन्दर-भालुओं की ही न? यह बात हमें नहीं भूलनी चाहिए। 'जब काम पूरा हो गया तो लङ्का में क्यों रहा जाए? अयोध्या चलेंगे।' भगवान रामचन्द्र ने कहा। तुरन्त विभीषण जाकर पुष्पक विमान ले आया। हाँ, तो पुष्पक विमान जानते हो न? बड़ा विचित्र विमान था! कहते हैं कि उस पर चाहे कितने ही लोग क्यों न चढ़ें, और एक के चढ़ने के लिए उस पर जगह जरूर रहती थी। हाँ, तो राम, सीता, लक्ष्मण और अन्य प्रमुख लोग विमान पर चढ़ गए। उनके साथ हनुमान भी चढ़ा। वानर-सेना के सेनापति अङ्गद, सुग्रीव आदि नीचे खड़े हो गए। 'हाँ, तो अब हम बिदा लेते हैं।' यह कह कर राम ने वानर-सेना की ओर एक स्नेह भरी निगाह डाली। 'कृपा बनाए रखिएगा।' वानर-सेना के नेताओं ने गद्गद् कंठ से उनसे कहा। भगवान रामचन्द्र ने अपनी सेना की ओर एक आखिरी निगाह डाली। उन्हें वानरों के चेहरों पर एक व्याकुलता दिखाई दी, जैसे वे कुछ कहना चाहते हों। उनमें से कुछ लोग एक दूसरे के कानों में कुछ फुसफुसा रहे थे। 'खामोश!' उनके नेताओं ने उन्हें डपटा। लेकिन वानर-सेना की फुसफुसाहट दबने के बदले सभी कतारों में फैल गई। 'हमारे सामने ही तुम लोगों की यह धृष्टता?' यह सोच कर उनके नेताओं ने उनकी ओर एक

सुदर्शन

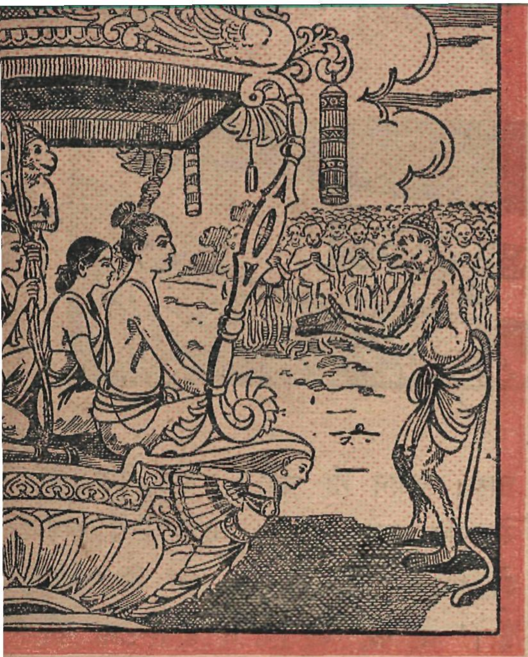

वालिवान नाम के वानर ने निर्भीक होकर, आगे आकर कहा—'भगवन्! आपने हमें अभय दिया। इसलिए मैं मन की बात बताता हूँ। हम वानर-वीर राम की सेवा के लिए ही पैदा हुए। यह सच है कि यहाँ का काम खतम हो गया है। लेकिन अब आप हमें यहाँ छोड़ जाइएगा तो हमारी क्या हालत होगी! अगर भगवान रामचन्द्र ही हमें छोड़ देंगे तो हमें कौन पुष्पक विमान पर चढ़ाएगा? हमारा शौक कैसे पूरा होगा? मैंने जो कुछ कहा, उसमें कोई गलती हो तो हमें माफ करें!' 'इतना ही नहीं; इस पुष्पक विमान का प्रभाव ऐसा है कि इसमें चाहें जितने आदमी चढ़ सकते हैं। फिर हम सभी इस पर क्यों नहीं चढ़ सकते? इसमें किसी को कोई नुकसान तो है नहीं?' और एक वानर ने पूछा। इस तरह वानर सभी आपस में बातें करने लगे। यह देख कर लक्ष्मण ने झुँझला कर कहा—'देखा भैया? ये अभी से आपस में झगड़ने लगे हैं। हम इन्हें अयोध्या ले जाएँगे तो क्या

क्रोध भरी निगाह डाली। भगवान राम ने यह सब देख लिया। उन्होंने सुग्रीव आदि से कहा—'हे अङ्गद! हे सुग्रीव! तुम लोग वानर-वीरों को डाँटो नहीं। उनके मन में जो इच्छा है, साफ साफ कहने दो! ये कोई मामूली आदमी नहीं हैं। इन्हीं के कारण तो युद्ध में हमें विजय मिली! अब इनको डाँटने-डपटने का समय बीत गया। अब इन पर स्नेह की वर्षा करो!' यह सुनते ही वानर-वीरों ने अपनी पूँछें ऊँची करके अपना सन्तोष प्रगट किया। तब

इन्हें देख कर सब लोग हँसने नहीं लगेंगे ?' तब भगवान रामचन्द्र ने लक्ष्मण को फटकारा और वानरों से कहा—'भाइयो ! आप लोग व्याकुल न होइए। हम किसी को यहाँ छोड़ नहीं जाएँगे। हम सभी अयोध्या जाएँगे। इस दिव्य पुष्पक विमान के रहते हमें किस बात की कमी ? यह मुझे आप सबसे पहले ही कहना चाहिए था। लेकिन मैं भूल गया।' यह कह कर रामचन्द्र ने वानरों को शांत किया। 'हाँ ! हाँ ! हमसे कितनी बड़ी भूल हो गई ? अब पूछिए, इन वानर वीरों की और क्या क्या इच्छाएँ है ?' जानकी ने भगवान को सलाह दी। तब एक पेटू वानर ने डरते डरते अपने मन की इच्छा इस तरह प्रगट की—'भगवन् ! भक्तों को मन-चाहे वर देने में आपकी बराबरी कौन कर सकता है ? हाँ, कंद-मूल खा-खाकर हमारी जीभ बहुत हैरान हो गई है। हमने सुना है कि आप जैसे राजे-महाराजे स्वादिष्ट लड्डू वगैरह खाते हैं। लेकिन हमने कभी वे सब चीज़ें नहीं चखीं। क्या हमें उन्हें चखने का

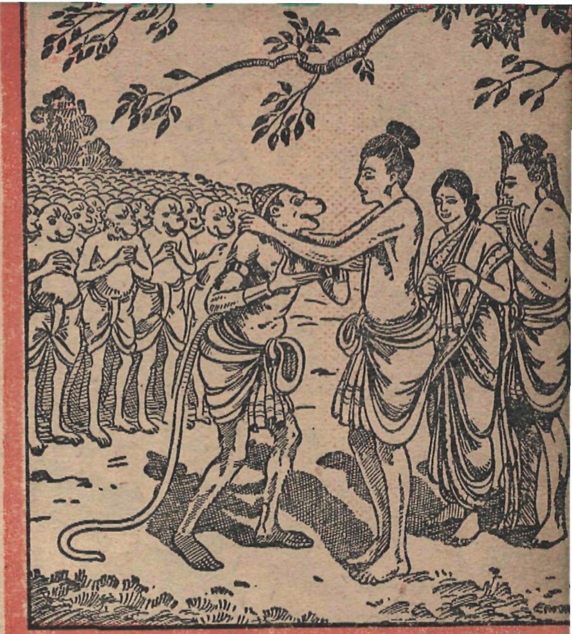

मौका न मिलेगा ?' उसकी यह इच्छा सुन कर सीता-राम के मुँह पर एक मुसकुराहट खेल गई। तब हनुमान ने सोचा—'असल में हैं ये सब बंदर ! तिस पर लड़ाई में जीत कर खुशी से फूले हुए हैं। फिर रामचन्द्र ने इन्हें मनचाही चीज़ माँगने की इजाजत भी दे दी है। अब ये लोग न जाने क्या क्या माँगने लगेंगे ?' यह सोच कर हनुमान ने वानरों की तरफ फिर कर एक हुंकार जो भरी तो सभी बंदरों ने तुरंत भय से सिर झुका लिया। लेकिन भगवान ने कहा—'भाइयो ! तुम

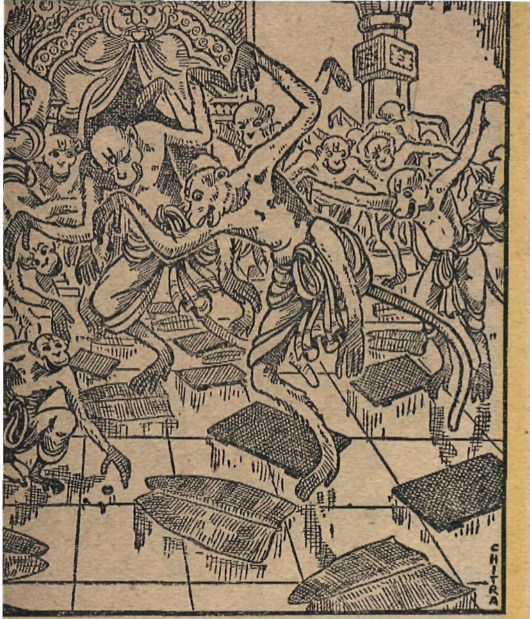

लोग अयोध्या आकर जो चीज़ चाहो खा सकोगे। इसलिए अब देरी न करो। आओ! सभी विमान पर चढ़ जाओ?' उनके इतना कहते ही तुरंत सभी वानर पूँछ उठाए दौड़े और विमान पर चढ़ गए। हवा को सर-सर काटते हुए पुष्पक विमान पल भर में अयोध्या जा उतरा। अयोध्या जाकर सबसे पहले भगवान ने वानरों को राज-भोज देने का इंतजाम किया। इसका सारा बोझ हनुमान के कंधे पर पड़ा। एक घंटे में सब चीज़ें जुटा ली गईं। और एक घंटे में छप्पन व्यंजनों के साथ वानरों के लिए राज-भोज तैयार हुआ। हनुमान ने आकर कहा—'सब लोग कतारों में बैठ जाओ। अभी खाना परोसा जाएगा।' हनुमान की बात सुन कर कर, सब वानर शाँत होकर कतारों में बैठ गए। हाँ, तो बंदरों को बेर बहुत पसन्द हैं न? यह जान कर सब के पत्तलों में बेर भी परोसे गए थे। एक वानर ने जो कतार के बीच बैठा हुआ था एक बेर उठाया और दोनों उँगलियों के बीच पकड़ कर दबाया। तुरन्त उसकी गुठली बाहर फिसल आई और ऊपर की ओर उड़ी। यह देख कर उस वानर ने कहा—'तू चींटी जितनी चीज़! क्या तू मुझसे भी ऊँचा उठना चाहती है?' यह कह कर वह गुठली के साथ साथ ऊपर उछला। 'भैया न जाने क्यों उछल रहा है? मुझे भी इसके साथ उछल कर इसकी मदद करनी चाहिए।' यह सोच कर बगल का वानर भी ऊपर उछला। उन दोनों के पीछे तीसरा और उसके पीछे चौथा, इस तरह कतार के सब वानर ऊपर उछलने लगे।

परोसी हुई चीज़ें जहाँ की तहाँ बिखर गईं। वानर सभी एक जगह जमा होकर उछलने-कूदने लगे। यह देख कर हनुमान ने कहा—'भाइयो! यह कैसी ऊधम है? क्या इतने में तुम लोग कहा-सुना सब भूल गए? इसीलिए तो लोग हमें बन्दर कहते हैं! खाने के लिए बैठने के बाद तुम लोगों ने इस तरह ऊधम मचाना शुरू किया। अगर अभी भगवान रामचन्द्र आ जाएँ तो वे मन में क्या सोचेंगे? वे यह सब कैसे बर्दाश्त करेंगे?' यों हनुमान उन्हें फटकारने लगा। इतने में में लड्डू की टोकरियाँ हाथ में लिए सीताराम खुद परोसने आए। उन्हें देख कर वानर सभी जहाँ के तहाँ चुपचाप बैठ गए। 'हनुमान! अपने वानरों पर क्यों नाहक बिगड़ते हो! देखो तो? वे कितनी शांति से बैठे हैं?' तब हनुमान ने सोचा—'हाँ, अब ये ऊधम नहीं मचाएँगे।' भगवान लड्डू परोसने लगे। इतने में एक वानर को न जाने क्या सूझा कि वह उनके कंधे पर चढ़ बैठा। दूसरे ने उनके हाथों से लड्डुओं की

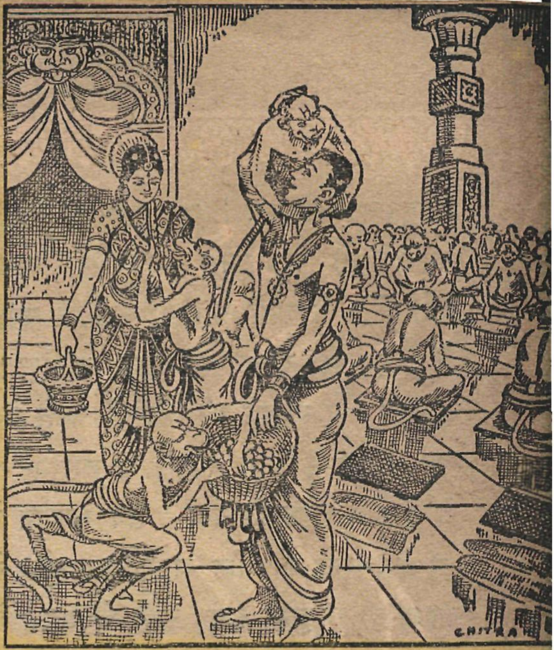

डलिया छीन ली। और एक वानर देवी सीता के गले का हार पकड़ कर कौतुक से देखने लगा, जैसे वह जौहरी हो। लेकिन इससे भी सीताराम को क्रोध न आया। वानरों को इस तरह खेलते देख कर उलटे उन्हें खुशी हुई। पर हनुमान और लक्ष्मण वानरों की ओर घूर घूर कर देखने लगे। क्योंकि सीताराम को इस तरह अड़चन में देख उन्हें बहुत गुस्सा आ रहा था। कहाँ भगवान रामचन्द्र और कहाँ ये बंदर! कुछ छोटे-बड़े का ख्याल तो रखना चाहिए!

'हनुमान ! लक्ष्मण ! जब बाल-बच्चे शरारत करते हैं तो क्या उनसे माता-पिता नाराज होते हैं ? ये वानर तो हमारे बच्चों के समान हैं ! इन पर गुस्सा नहीं होना चाहिए।' हनुमान और लक्ष्मण की त्यौरियाँ चढ़ते देख कर भगवान ने उनसे कहा। वे मुसकुरा रहे थे। भोज खतम हो गया। तब भगवान ने हर एक वानर की पीठ अपने कर-कमल से सहला दी। तुरन्त वानर सभी जो लड़ाई के कारण थके हुए थे, तरो-ताजा हो गए। फिर भगवान के राज्याभिषेक की तैयारियाँ धूम-धाम से होने लगीं। उस अवसर पर भगवान ने खास तौर पर अपनी वानर-सेना की प्रशंसा की। उन्होंने भरे दरबार में कहा—'हे वीरो ! पृथ्वी पर राम की कहानी के साथ साथ वानर वीरों का नाम भी अमर हो जाएगा। वानर को देखते ही हरेक मनुष्य को रामायण की कहानी याद आ जाएगी। इन दोनों में इतना गहरा नाता हो जाएगा कि तुम को खुश करने में ही मेरी खुशी जान कर मनुष्य तुम्हारी पूजा करके समझेंगे कि वे मेरी पूजा ही कर रहे हैं। आज से तुम इस देश के सभी तीर्थों में जाकर अपना घर बसा लो। वहाँ जो पुण्यात्मा लोग आएँगे, वे तुम्हें देख कर धन्य हो जाएँगे। मैं तुम्हारी सहायता का यही बदला चुका सकता हूँ।' यह कह कर भगवान ने प्रेम से उन्हें आशीर्वाद दे दिया। भगवान जब इस तरह कह रहे थे तो आसमान में देवता दुंदुभी बजाने लग गए। वानरों पर फूलों की वर्षा हुई। उन्होंने पूँछें हिलाते हुए सीताराम और हनुमान के चरण छुए और विदा लेकर ऊधम मचाते हुए, देश के सभी तीर्थों में फैल गए। इसलिए इस देश के जितने भी तीर्थ हैं सब में वानर पाए जाते हैं।

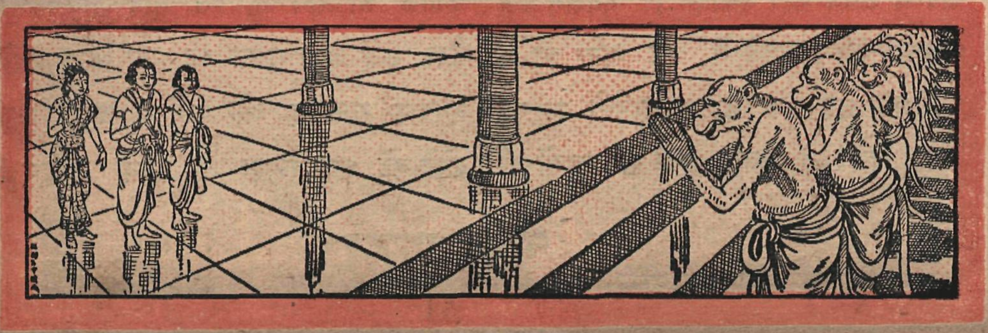

१

किसी समय एक अफ़सर रिश्वत खाकर खूब रुपया कमाने लगा। इस तरह ज्यों ही उसकी आमदनी बढ़ गई, त्यों ही उसने अपने रसोइए को बुला कर कहा—'महाराज! कल से हमारे लिए छः तरह के व्यंजन तैयार करो!' उसी तरह महाराज रोज छः तरह के व्यंजन बनाने लगा। लेकिन कुछ दिन बाद चारों तरफ उसके रिश्वत खाने की बात फैल गई। तब वह अफसर नौकरी से निकाल दिया गया। नौकरी छूटते ही अफसर ने अपने रसोइए को बुला कर कहा—'मेरी नौकरी छूट गई। इसलिए कल से छः व्यंजन न बनाना।' एक महीना बीत गया। रसोइए ने अफसर से आकर कहा कि घर में सामान खतम हो गया है। तब अफसर को कुछ शक हुआ। उसने रसोइए को साथ लेकर रसोईघर में जाकर देखा। वहाँ छः तरह के व्यंजन बना कर रखे हुए थे। 'महाराज! क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि एकाध व्यंजन बनाने से काम चल जाएगा?' अफसर ने गुस्से में आकर पूछा। 'जी हाँ! इसीलिए तो आपको एकाध व्यंजन ही परोसता हूँ।' महाराज ने जवाब दिया। 'तो फिर ये सब क्यों बनाए?' अफसर ने अचरज के साथ पूछा। 'जी! मैं रोज छः व्यंजन ही बनाता आ रहा हूँ। उनमें आपको एकाध ही परोसता हूँ।' महाराज ने कहा। 'ऐसा क्यों करते हो?' अफसर ने पूछा। 'जी! आपकी नौकरी छूट गई। इसलिए आप एकाध व्यंजन से ही काम चला लेते हैं। लेकिन मेरी नौकरी तो नहीं छूटी है?' रसोइए ने कहा। 'अच्छा! तो जाओ! तुम्हारी नौकरी अभी छूट गई।' यह कह कर अफसर ने रसोइए को निकाल दिया।

सुधीर

एक बार एक साधू रेलगाड़ी में सफर कर रहा था। एक स्टेशन पर टिकट-बाबू टिकट जाँचने आया। 'मेरे पास टिकट नहीं है।' साधू ने बिना हिले-डुले जवाब दिया। 'यह कैसी बात है साधू जी! तुम गेरुआ पहने हो। दाढ़ी बढ़ा कर बड़े साधू बने हो! क्या धोखा देना ही मुक्ति का मार्ग है?' टिकट-बाबू ने पूछा। 'जी! हमने किसको धोखा दिया? हम जानते हैं कि सत्य ही भगवान है। इसलिए सत्य के लिए ही हमने जीवन अर्पण कर दिया है। साधू को पैसे से क्या काम? गृहस्थों को साधुओं का पोषण करना चाहिए। इसीलिए रेल वालों को भी बिना टिकट हमें सफर करने देना चाहिए।' साधू ने जवाब दिया! 'रेल वालों का यह कायदा है कि बिना टिकट सफर करने वालों को नीचे उतार दिया जाता है।' टिकट बाबू ने कहा। 'क्या संसार में सब एक ही तरह के लोग होते हैं?' साधू ने कहा। 'इतना ही नहीं; बिना टिकट सफर करने वालों को जेल की हवा भी खानी पड़ती है।' टिकट बाबू ने कहा। 'तो क्या हुआ? जेल में हमें सरकार खाना देगी, कपड़ा देगी। जैसे यहाँ वैसे जेल में। इससे बढ़ कर हमें क्या चाहिए?' साधू ने पूछा। 'जेल में आपका भजन कैसे चलेगा? वहाँ आपको भगवान कैसे मिलेंगे?' टिकट बाबू ने उसकी हँसी उड़ाई। 'भाई! तुम नासमझ मालूम होते हो। क्या जेल में भगवान नहीं है? भगवान सब जगह है। इसलिए जेल हो या रेल हो, हमारे लिए सब बराबर है।' साधू ने मुसकुरा कर जवाब दिया। टिकट बाबू उसकी बात का जवाब न दे सका। यों ही सर खुजलाता चला गया।

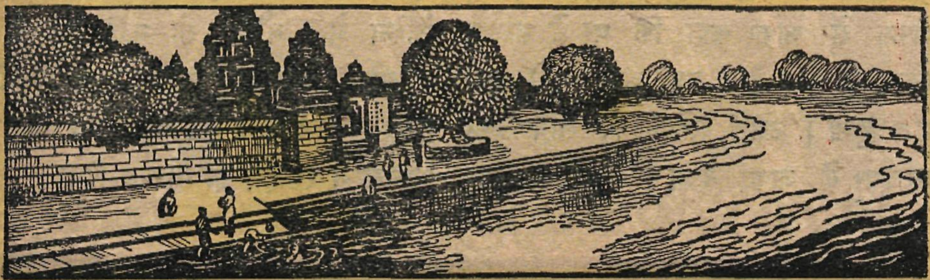

यह आज या कल की बात नहीं। कई सौ बरस पहले की बात है। एक गाँव में एक ब्राह्मण रहता था। वह खूब पढ़ा-लिखा था। सब शास्त्रों में पारंगत था। उसके न बाल-बच्चे थे, न पत्नी थी। फिर भी वह इतना गरीब था कि पेट भरना ही उसके लिए कठिन हो जाता था। पांडित्य में वह किसी से कम न था। आस-पास के सब पंडितों को वह शास्त्रार्थ में आसानी से हरा सकता था। लेकिन न जाने, वह कैसा बदनसीब था कि उसे बहुत कोशिश करने पर भी कहीं नौकरी न मिली। उन दिनों आज की तरह लिखने के लिए कागज-कलम नहीं थे। ताड़ के पत्तों पर लोहे के काँटे से लोग लिखते थे। इस ब्राह्मण को कुछ काम-धाम तो था नहीं। बेकार बैठे समय काटना कठिन हो जाता है न? तिस पर एक या दो दिन नहीं; महीनों, सालों। इसलिए यह ब्राह्मण ताड़ के पत्तों के गट्ठर लेकर अपनी देहली पर बैठता और कुछ न कुछ लिखता रहता। मन में जो आता, वही लिख डालता। जो दृश्य नजर में आता, जो आवाज उसके कानों में पड़ती, वे सभी लिख डालता। बाहर कुत्ता भूँकता तो उसके बारे में लिखता। खेत में सियार हुँआ! हुँआ! करता तो उसके बारे में लिख डालता। यही क्यों? हवा चलने पर जब पेड़ों पर पत्ते हिलने लगते तो वह उसके बारे में भी लिख डालता। इस तरह वह दिन को ही नहीं, रात में भी लिखता ही रहता। वह क्या

रामसुख पांडे

लिख रहा है, क्यों लिख रहा है, यह उस को भी ठीक-ठीक मालूम नहीं था। पर वह हजार आँखों और हजार कान वाले आदमी की तरह हर एक बात लिखता रहता। इस तरह लिखते लिखते ताड़ के पत्तों के गट्ठर के गट्ठर पूरे होने लगे। सारा घर उन्हीं गट्ठरों से भर गया। लेकिन ब्राह्मण ने लिखना बंद नहीं किया। हाँ, तो एक बार ऐसा हुआ कि उस नगर के राजा के महल में चोर घुस आए और बहुत से हीरे-जवाहरात चुरा ले गए। राजा के सिपाहियों ने उनका पीछा किया। लेकिन चोर पकड़े न जा सके। राजा के सब नौकर-चाकर सोच करने लगे। आखिर उन में से एक को एक बात सूझी। उसने कहा—'हमारे शहर में एक वह पागल ब्राह्मण है न, जो दिन-रात बैठ कर देखी-सुनी हरेक बात लिखता रहता है? चलो, उससे पूछ कर देखें। शायद उसने कुछ देखा-सुना हो!' तुरंत राजा के सिपाही उस ब्राह्मण के पास दौड़े और पूछ-ताछ करने लगे। ब्राह्मण ने अपना पोथा खोला और उस दिन की बातें पढ़ने लगा। बहुत देर तक पढ़ते-पढ़ते उसे एक जगह मिला—' दो पहर रात गए हमारे घर के पिछवाड़े के कुँए में धमाके की आवाज हुई।' सिपाही समझ गए कि भागते भागते चोरों ने हीरे-जवाहरों की

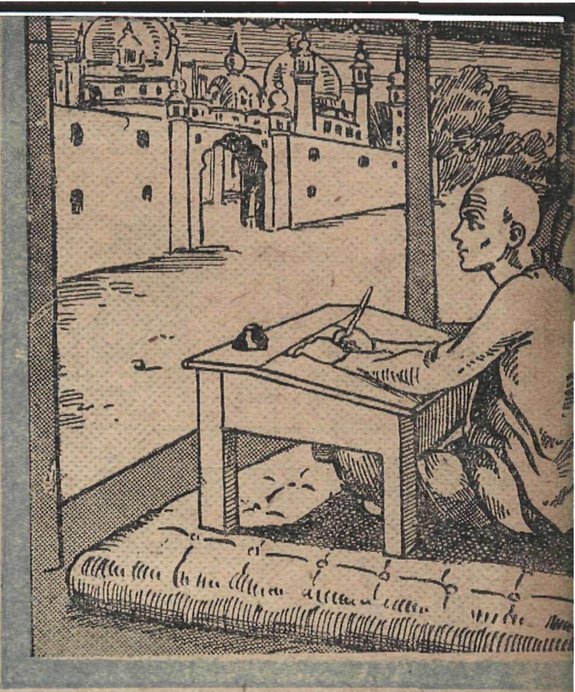

पेटी उसी कुँए में डाल दी होगी। यह सोच कर उन्होंने कुँए में ढूँढ़ना शुरू किया। सब चीजें कुँए में मिल गईं। एक भी चीज़ खोई नहीं थी। सिपाहियों ने जाकर राजा को सारा हाल सुना दिया। ब्राह्मण की बात सुन कर राजा को बहुत अचरज हुआ। उसने मंत्री को बुला कर कहा—'ऐसे व्यक्तियों से राज्य का गौरव बढ़ता है। इसलिए इस ब्राह्मण को आज से राज की तरफ से नौकरी दे दो। इसे राज-महल के सिंहद्वार पर रखो और राजा के नौकर के लायक अच्छी पोशाक भी बनवा दो।' राजा का हुकुम सुनते ही मंत्री ने ब्राह्मण को इसकी सूचना दी। उसकी खुशी का क्या कहना! उस दिन से ब्राह्मण अपनी टूटी-फूटी झोंपड़ी छोड़ कर राज-महल में रहने लगा। उसकी सेवा-टहलके लिए नौकर-चाकर भी रखे गए। उसे कुछ गाँवों की जागीरी भी मिल गई और उसके बाल-बच्चों को भी उस पर हक दिया गया। उस दिन से उस ब्राह्मण को लोग सभी 'धमाके पंडित' कह कर पुकारने लगे। 'लोग चाहें जो कहें! इससे मेरा क्या बिगड़ता है? मैं तो अब आराम से हूँ।' उस ब्राह्मण ने सोचा। ब्राह्मण ब्याह कर के सुख से जीवन बिताने लगा।

मिट्ठू की कहानी

किसी समय एक गाँव में मिट्ठू नाम का एक आदमी रहता था। उसे गाँव वाले सभी 'मिठुआ' कहते थे। लेकिन उसकी औरत उसे 'अजी! अजी!' कहा करती थी। एक दिन भूल से उसके मुँह से भी 'मिठुआ!' निकल गया! बस, मिठुआ को गुस्सा आ गया। 'गाँव वाले 'मिठुआ' कहते हैं;

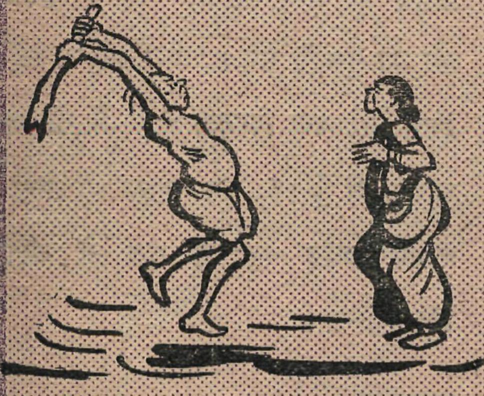

तो क्या तुम भी मुझे 'मिठुआ!' कहोगी?' यह कह कर उसने उसे मार कर बाड़ी में गाड़ दिया। कुछ दिन बाद उसकी बीबी जहाँ गड़ी थी, उस जगह साग पैदा हुआ। हवा चलते वक्त जब साग के पत्ते झूमने लगते तो बोल उठते—'आ! मिठुआ! आ! मिठुआ!' तब मिठुआ को ऐसा लगता जैसे सैकड़ों बिच्छू डंक मार रहे

हों। आखिर जब उससे न रहा गया तो उसने साग को काट कर तरकारी बना डाली। लेकिन न जाने, उसका भाग्य कैसा था कि तरकारी भी पकते वक्त 'चुप! चुप! मिठुआ! चुप! चुप! मिठुआ!' कहने लगी। यह देख कर मिठुआ की सारी देह जलने लगी। आखिर जब उसे कुछ नहीं सूझा तो वह सारी तरकारी उठा कर

भैंस की नाँद में डाल आया और खुद चटनी-भात खाकर सो रहा। दूसरे दिन जब मिठुआ दूध दुहने गया तो दूध की धार भी मटिया में कहने लगी—'सूँ! सूँ! मिठुआ! सूँ! सूँ! मिठुआ!' तब मिठुआ को भैंस पर इतना गुस्सा आ गया कि उसने उसे मार डाला और चमार को उसकी चमड़ी से जूते बना लाने को कहा। चमार

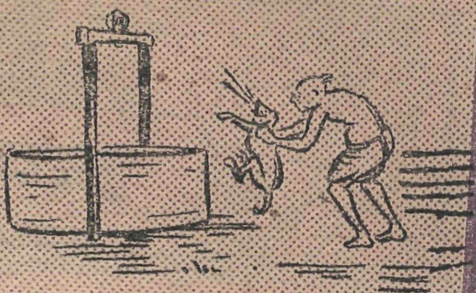

जूते बना लाया। मिठुआ वे जूते पहन कर राह पर चलने लगा तो जूते भी कहने लगे—'चर्र मर्र मिठुआ! चर्र मर्र मिठुआ!' तब गुस्से से मिठुआ का सारा मुँह काला हो गया और उसने उन जूतों को एक कुत्ते के सामने फेंक दिया। लेकिन इतने से भी उसका पिंड नहीं छूटा। कुत्ता अब 'भौं! भौं! मिठुआ! भौं! भौं! मिठुआ!' कह कर भूँकने लगा। तब मिठुआ ने उस कुत्ते को पकड़ लिया और नजदीक के एक कुँए में डाल दिया। कुत्ता जब डूबने लगा तो कुएँ के पानी में से 'डूब! डूब! मिठुआ! डूब! डूब! मिठुआ!' की आवाज आई! तब मिठुआ को इतना क्रोध आया कि वह अपने आपको न सम्हाल सका और कुएँ में कूद गया। बस, उसकी सारी बला टल गई!

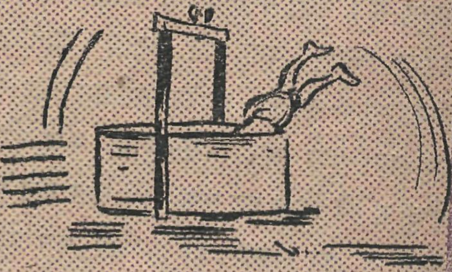

चपला कुमारी

ऊर्णनाभ

हम जिस संसार में रहते हैं उसको और देवता आदि जिन लोकों में रहते हैं उनको भी ब्रह्मा ने ही बनाया। सृष्टि करने में ब्रह्मा ने अपनी अपूर्व चतुरता दिखाई। इसलिए सब लोगों ने उसकी प्रशंसा की। लेकिन ऊर्णनाभ ने कुछ नहीं कहा। ऊर्णनाभ विश्वकर्मा का बेटा था। यह विश्वकर्मा कौन था? विश्वकर्मा देवताओं का शिल्पी था। उसी ने देवताओं के महल, किले, और नगर बनाए थे। उसी ने देवताओं के बाग-बगीचे, सरोवर आदि बना कर उनको आनंदित किया था। उसका लड़का ऊर्णनाभ बाप से बढ़-चढ़ गया था। संसार में कोई ऐसी चीज़ न थी जिसे वह एक बार देख लेने पर तैयार न कर सकता हो। जब सब लोग ब्रह्मा की प्रशंसा करने लगे तो ऊर्णनाभ ने कहा—'ब्रह्मा की कौन बड़ाई है इसमें? ऐसी ऐसी चीज़ें तो मैं भी तैयार कर सकता हूँ।' यह कह कर वह भी ब्रह्मा की सृष्टि की सब चीज़ें बनाने लगा। जब ब्रह्मा को पता चला कि ऊर्णनाभ उससे होड़ करने चला है, तो उसे बहुत क्रोध आया। उसने उसे बुला कर कहा—'क्यों जी! तुम को अपनी बुद्धि पर इतना गर्व हो गया कि मुझसे ही टक्कर लेने लगे हो? चाहे तुम कितनी कोशिश करो, क्या मेरी तरह सृष्टि कर सकते हो? तुम्हारी सृष्टि तो तुम्हारे नाम के ही अनुरूप होगी। 'ऊर्णनाभ' का अर्थ होता है 'मकड़ी'। तुम्हारी सृष्टि भी मकड़ी के जाले जैसी होगी जो एक बार फूँक देने से उड़ जाता है। इसलिए मुझसे होड़ लगाने का विचार छोड़ दो और देखो—फिर कभी ऐसी कोशिश न करना!' लेकिन ऊर्णनाभ ब्रह्मा की फटकार सुन कर

रघुवीर शरण

चुप न रहा। उसने कहा—'बूढ़े बाबा! मुझे डराने-धमकाने का ख्याल छोड़ दो! तुम कौन होते हो मुझे फटकारने वाले?' देवता कितने ही शांत चित्त वाले क्यों न हों, कभी कभी उन्हें भी क्रोध आ ही जाता है। ऊर्णनाभ की बातें सुन कर ब्रह्मा को भी इसी तरह क्रोध आ गया। 'ऊर्णनाभ! तूने मेरा अपमान किया। इसलिए जा! तू पृथ्वी पर एक ऊर्णनाभ (मकड़ी) बन कर पैदा होगा और पेड़ों पर जाले बुन कर अपनी जिंदगी बिताएगा।' ब्रह्मा ने उसे शाप दे दिया। और क्या था? शाप सुनते ही ऊर्णनाभ थर-थर काँपते हुए ब्रह्मा के पैरों पर गिर पड़ा और गिड़गिड़ा कर माफी माँगने लगा—'देव! मुझे क्षमा कीजिए! मुझे इस मकड़ी के जन्म से बचाइए।' तब ब्रह्मा को उस पर करुणा आई। उसने कहा—'मेरा शाप तो अन्यथा नहीं हो सकता। तुझे मकड़ी बन कर पैदा होना ही होगा। हाँ, मैं तुझे उसी जन्म में मोक्ष पाने का एक उपाय बता सकता हूँ। सुनो! तुम एक बिल्व-वृक्ष पर पैदा होने जा रहे हो। उसी जंगल में एक शिवलिंग है। उसकी पूजा

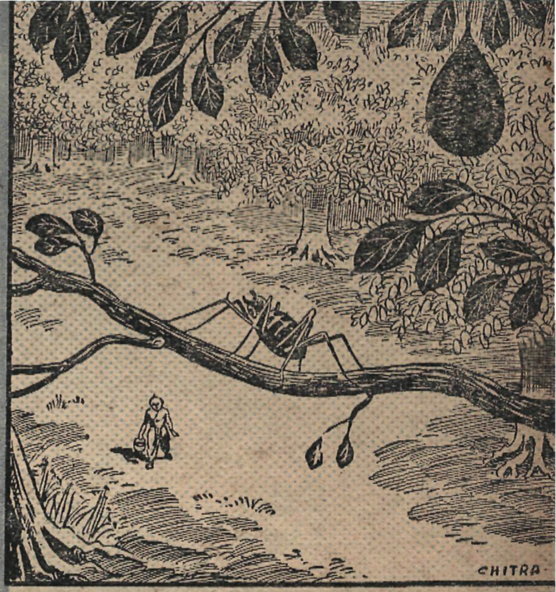

के लिए एक भक्त रोज बेल के पते तोड़ने तुम्हारे पास आएगा। उन पत्तों के साथ तुम भी शिव के निकट पहुँच कर मोक्ष पाओ!' ब्रह्मा के शाप के अनुसार ऊर्णनाभ उस जंगल में बिल्व-वृक्ष पर मकड़ी बन कर पैदा हुआ। इस जन्म में भी मकड़ी को अपने पूर्व-जन्म का सारा हाल याद था। इसलिए वह मकड़ी बड़ी उतावली से राह देखने लगी कि कब वह शिव-भक्त आए और कब शिवलिंग के पास उसे पहुँचा दे। कुछ दिन बाद ब्रह्मा के वचनानुसार शिव-भक्त उस पेड़ के नजदीक आकर पत्तियाँ तोड़ने

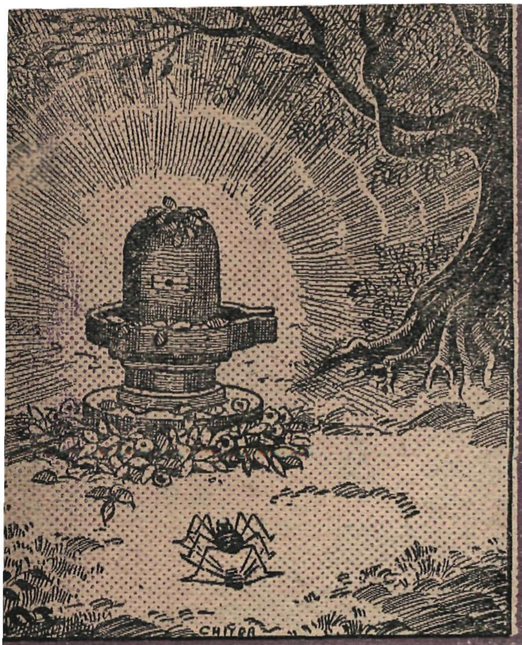

लगा। जिस डाल की पत्तियाँ वह तोड़ रहा था, मकड़ी उस पर गई और पत्तियों में छिप कर भक्त की टोकरी में चली गई। वह भक्त उन पत्तियों को ले जाकर उसी जंगल में एक शिवलिंग की पूजा करने लगा। वह एक एक पत्ती उठा कर लिंग पर डालने लगा। आखिर जिन पत्तियों में मकड़ी छिपी हुई थी वे भी भगवान पर चढ़ीं। इस तरह उस मकड़ी को शिवजी के दर्शन हुए। उस भक्त के चले जाने के बाद मकड़ी पत्तियों से बाहर निकल आई और आँखें भर कर शिवजी को देखने लगी। 'मैं महादेव की नियम-पूर्वक पूजा करके मोक्ष पाऊँगी।' उसने मन में निश्चय कर लिया। लेकिन तुरंत ही वह मकड़ी एक सोच में पड़ गई। उसने सोचा– 'मैं केवल एक मकड़ी हूँ! फिर भगवान की पूजा के लिए दल-फूल चाहिए। मैं ये सब कहाँ से लाऊँगी? न ला सकूँगी तो फिर भगवान की पूजा कैसे करूँगी?' इस तरह सोचते सोचते उसके मन में एक विचार उठा। 'भगवान की पूजा करने के लिए दल-फूल ही अनिवार्य नहीं हैं। इसके अन्य उपाय भी हो सकते हैं। क्या मैं सुन्दर जाला नहीं बुन सकती? इस भगवान के लिए किसी ने मंदिर वगैरह बनाया भी नहीं है। मैं अपनी सारी शक्ति लगा कर इस भगवान के लिए एक सुन्दर मंदिर बनाऊँगी।' उसने मन में कहा और तुरंत काम शुरू कर दिया। शाम होते तक उसने भगवान के लिए एक सुन्दर मंदिर, मंडप वगैरह बना दिए। जानते हो, उसने कैसे बनाया? ईंट-गारे से नहीं! मकड़ी ईंट-गारा कहाँ से लाती? लेकिन उसकी नाभि में एक तरह की गोंद रहती है। इस गोंद से मकड़ी सुन्दर, सुनहरे रेशे निकाल कर उनसे जाले

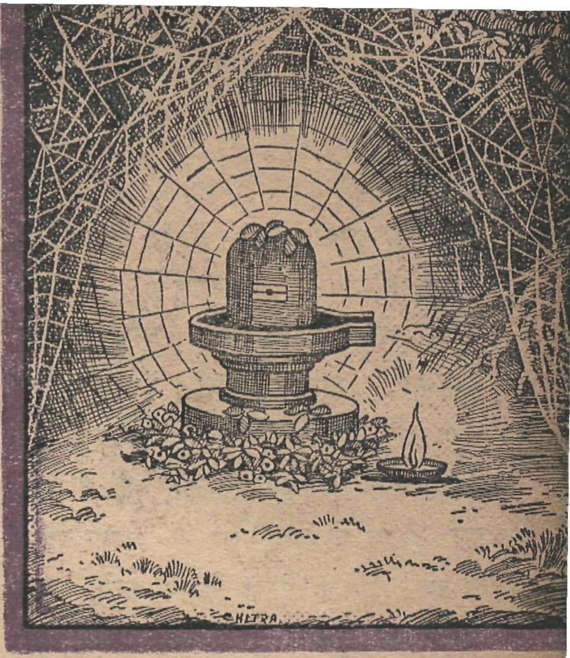

बुनती है। इस मकड़ी ने भी उन्हीं रेशों से महादेव के लिए मंडप, मंदिर वगैरह बनाए। वे इतने सुन्दर थे कि कुछ कहा नहीं जा सकता। देवता लोग भी वैसी बुनाई नहीं कर सकते। दूसरे दिन जब सबेरा हुआ तो ओस की बूंदें उन जालों पर पड़ीं और सूरज की रोशनी में उन्हें देखने से ऐसा मालूम होने लगा जैसे किसी ने बहुमूल्य मोतियों की झालरें लटका दी हों। प्रभात की आभा में ओस की हरेक बूँद पर सैकड़ों इंद्र-धनुष नाच उठे। लेकिन एक कठिनाई जरूर थी। मकड़ी के जाले से बुने हुए मंदिर और मंडप देखने में सुन्दर तो थे। लेकिन उनमें टिकाऊपन कहाँ था? ज्यों ही जरा हवा चलने लगती त्यों ही उनके तार टूटने लगते। उनको फिर से जोड़ने में ही मकड़ी का सारा समय बीत जाता। फिर भी वह बड़े सब्र से दिन रात उन्हें जोड़ती रहती। महादेव पर उसकी भक्ति का कोई ठिकाना न था। इस तरह कुछ दिन बीत गए तो महादेव के मन में उस मकड़ी की परीक्षा लेने का विचार उठा। एक दिन वह भक्त, जिसके कारण मकड़ी को भगवान के निकट आने का मौका मिला था, रोज की तरह पूजा करने आया और पूजा समाप्त होने के बाद भगवान के सामने दीप जला कर चला गया। उसके जाने के बाद भगवान ने अपने प्रभाव से दीपक की लौ को बढ़ा दिया। एक तिलक की तरह जलती हुई लौ पल में मशाल की तरह जलने लगी और देखते देखते मकड़ी के अत्यंत मेहनत से बुने हुए जालों में आग लग गई। पल भर में भगवान के मंदिर, मंडप वगैरह सब जल गए। अब बेचारी मकड़ी क्या करती? मकड़ी को दीपक पर बहुत क्रोध

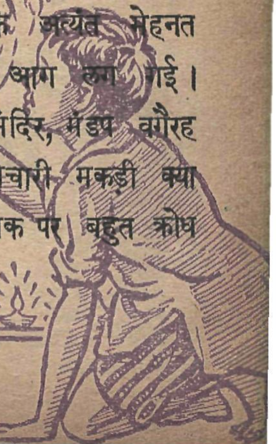

आया। उसने मन में कहा—'भगवान के लिए मैंने इतनी मेहनत करके जो मंदिर-मंडप बनाए वे तो जल गए। मेरी सारी मेहनत पर पानी फिर गया। अब मैं जीकर क्या करूँ? भगवान के प्रति इस दीपक ने बड़ा भारी अपराध किया। इसलिए मैं मर कर भी इसे दंड दूँगी। जान गई तो गई; इस दीपक को बुझा कर मैं अपना बदला तो चुका दूँगी।' यह निश्चय करके मकड़ी दीपक को बुझाने के लिए दौड़ती हुई भगवान के निकट आई। यह देख कर भगवान भी चकित हो गए। 'अहा! इस मकड़ी की भक्ति का क्या कहना है?' भगवान ने सोचा। झट वह प्रत्यक्ष हुए और मकड़ी से कहने लगे—'ठहरो! ठहरो! उस दीपक को न बुझाओ। तुम्हारी भक्ति की परीक्षा लेने के लिए मैंने ही यह नाटक किया है। मैं तुम्हारी भक्ति से बहुत खुश हूँ। अब बोलो! तुम क्या चाहती हो?'

भगवान को प्रत्यक्ष देख कर मकड़ी की खुशी का ठिकाना न रहा। लेकिन वह शिव का स्तोत्र करने के लिए श्लोक वगैरह तो जानती न थी। इसलिए भक्ति से पागल होकर वह बारंबार भगवान को प्रणाम करने लगी। भगवान ने वर माँगने को कहा। मकड़ी चाहती तो उस जन्म से छुटकारा पाकर और कोई जन्म माँग सकती थी। धन-दौलत या दीर्घायु माँग सकती थी। लेकिन मकड़ी ने ऐसी कोई चीज़ नहीं माँगी। 'किसी भी जन्म में यातना से छुटकारा नहीं मिल सकता। इसलिए मैं जन्म नहीं चाहती। भगवन्! तुम मुझे अपने में मिला लो!' उसने अपनी इच्छा प्रगट की। भगवान ने उसकी बुद्धिमानी की बहुत प्रशंसा की। उन्होंने उसे अपने में लीन करके मोक्ष दिया। इस तरह कीटक जन्म में भी ऊर्णनाभ को मोक्ष मिल गया।

चालाक लड़की

किसी समय मगध देश में एक राजा रहता था। वह अपनी प्रजा का संतान की तरह पालन करता था। इसलिए सब लोग उससे प्यार करते थे। लेकिन उसमें एक बड़ी भारी खराबी थी। वह यह थी कि कोई अगर उसका कहा काम झट नहीं करता या उसका मना किया हुआ काम करता तो उसे बहुत गुस्सा आ जाता। उस गुस्से में वह बहुत अनुचित काम भी कर बैठता था। लेकिन थोड़ी ही देर में उसका गुस्सा काफूर हो जाता और वह बहुत पछताता कि क्यों मैं इस तरह आप से बाहर हो जाता हूँ! वह राजा कभी कभी अकेले बैठ कर इस तरह सोचने लगता—'मैं हर रोज किसी न किसी पर गुस्सा कर ही बैठता हूँ। यह कोई अच्छी बात नहीं है। अगर मुझे कोई ऐसी लड़की मिलती, जो मेरा कहा काम करती और मना किया हुआ काम न करती तो बड़ा अच्छा होता। मैं उससे ब्याह करके उसे अपनी रानी बना लेता।' लेकिन उसे इस तरह की न कोई लड़की मिली और न उसने ब्याह ही किया। इस तरह कुछ दिन बीतने के बाद एक बार वह राजा जंगल में शिकार खेलने गया। शिकार खेलते-खेलते वह बहुत दूर चला गया और राह भूल कर भटकने लगा। प्यास के मारे उसका गला सूखने लगा। लेकिन कहीं पानी की एक बूँद भी न दिखाई दी। भटकते-भटकते दूर पर उसे एक झोंपड़ी दिखाई दी। उसकी जान में जान आई। झोंपड़ी के पास घोड़े से उतरा और पुकारा—'कोई है इस झोंपड़ी में?' इतने में एक सोलह साल की

लड़की उस घर से बाहर आई। 'मैं बहुत प्यासा हूँ। एक घूँट पानी मिलेगा?' राजा ने कहा। 'जरूर' कह कर वह लड़की अन्दर चली गई। थोड़ी देर में वह एक लोटे में दूध, एक कटोरी में कुछ फल और एक गिलास में पानी लेकर बाहर आई। राजा ने कुछ फल खाकर दूध पिया और अपनी प्यास बुझाई। तब राजा को चैन हुआ। वह लड़की की ओर देखने लगा। गरीबी के कारण उस लड़की के बदन पर गहने वगैरह कुछ थे नहीं। लेकिन इससे उस लड़की की शोभा और भी बढ़ गई थी। उसकी आँखों से भोलापन टपक रहा था। राजा ने उस लड़की की ओर देखते हुए उसे अपने हाथ का खाली लोटा दिखाया और कहा—'मैं इस देश का राजा हूँ। अगर तुम इस लोटे से सातों सागरों का जल निकाल लोगी तो मैं तुमसे ब्याह करके अपनी रानी बनाऊँगा।' राजा की बात सुनते ही उस लडकी ने नीचे झुक कर मुट्ठी भर मिट्टी उठा ली और राजा को दिखा कर कहा—'अगर तुम इस मिट्टी से संसार की सब नदियों में बाँध बाँध दोगे तो जरूर मैं इस लोटे से सातों सागर का पानी खींच लूँगी।' यह जवाब सुन कर राजा दंग रह गया। उसे बहुत आनंद भी हुआ। 'वाह! मैं इतने दिनों से तुम्हारी ही जैसी लड़की की खोज कर रहा था।' यह कह कर उसने उस लड़की को अपनी रानी बना लेने का निश्चय कर लिया। उसने उस लड़की के पिता को अपना निश्चय जता दिया। 'हम गरीबों को इस से बढ़ कर और क्या

चाहिए !' लड़की के पिता ने कहा। अब क्या था? राजा उस लड़की को अपने घोड़े पर चढ़ा कर अपने महल में पहुँचा। एक शुभ मुहूर्त में दोनों का ब्याह हुआ। ब्याह के पहले ही उस लड़की ने राजा से एक वचन ले लिया था। 'मैंने सुना है कि आप बड़े क्रोधी हैं। अगर यह सच है तो संभव है कि आप कभी न कभी मुझ पर क्रोध करके घर से निकाल दें। इसलिए मुझे वचन दीजिए कि जब आप मुझे घर से निकाल देंगे तो मुझे अपने साथ अपनी सबसे प्यारी एक चीज़ ले जाने की इजाजत दे देंगे। जब आप मुझे यह वचन देंगे, तभी मैं आपके साथ ब्याह करूँगी।' राजा ने उसकी बात मान ली। ब्याह होने के कुछ दिन बाद राजा एक दिन भोजन कर रहे थे कि रानी किसी बात में उन्हें सलाह देने लगी। वह सलाह राजा को अच्छी नहीं लगी। 'तुम्हारी राय कौन माँगने जाता है? हर बात में तुम अपनी टाँग क्यों अड़ाती हो? और तुम मुझे सलाह देने वाली होती हो कौन? तुम जैसी जंगली औरतों के लिए मेरे महल में जगह नहीं है। जाओ! कल मुँह-अँधेरे ही तुम मेरे महल में से चली जाओ!' राजा ने आग-बबूला होकर कहा। रानी पहले से ही जानती थी कि ऐसा कभी न कभी होगा ही। इसलिए उसने अन्दर जाकर राजा के दूध में कुछ जड़ी-बूटी मिला दी। वह दूध पीकर राजा ऐसा बदहोश सो गया कि दीन-दुनिया की खबर ही भूल गया। रातों-रात अपने नौकरों की मदद से राजा को लेकर रानी अपनी

झोंपड़ी में पहुँच गई। सबेरा हुआ। राजा की नींद जब टूटी तो उसने अपने आपको एक झोंपड़ी में पाया। 'मैं रात को अपने महल में सोया था। फिर यहाँ कैसे पहुँच गया?' वह अचरज करने लगा। 'क्यों? आप घबरा क्यों रहे हैं?' रानी ने वहाँ आकर पूछा। 'मुझे यहाँ कौन लाया! कैसे लाया? तुरंत बताओ!' राजा ने आँखें तरेरते हुए कहा। 'ठहरिए! गुस्सा न कीजिए! मैं ही आपको यहाँ ले आई हूँ। आप भूल गए क्या? क्या आपने मुझे वचन नहीं दिया था कि घर से निकाल दिए जाने पर मुझे अपने साथ सबसे प्यारी एक चीज़ ले जाने का अधिकार होगा!' रानी ने पूछा। 'हाँ, वचन तो दिया था।' राजा ने याद करके कहा।

'तो और क्या? क्या आपको मालूम नहीं कि मेरी सबसे प्यारी चीज़ आप ही हैं? इसीलिए आपको अपने साथ ले आई हूँ!' रानी ने शांत-भाव से कहा। राजा के अचरज का ठिकाना न रहा। 'वाह! रानी! तुमने यह कैसा काम किया? क्या इसीलिए तुमने ब्याह करने के पहले ही मुझसे ऐसा वचन ले लिया था? मुझे नाहक ही तुम पर गुस्सा आ गया। मैंने तुम्हें बहुत कष्ट दिया। यह सब भूल जाओ! अब कभी ऐसा न करूँगा! तुम्हारी जैसी रानी मुझे और कहाँ मिलेगी?' यह कह कर राजा रानी को लेकर महल को लौट गया। उस दिन से राजा-रानी में फिर कभी झगड़ा न हुआ। दोनों ने बहुत दिन तक राज किया।

चन्दामामा पहेली

सङ्केत

दाएँ से बाएँ :

१. हँसोड़
३. बलहीन
५. समस्या
६. भगवान
७. समुन्दर
९. हाथ का गहना
११. ब्याह का निश्चय
१२. घर

ऊपर से नीचे :

१. रोना
२. एक त्यौहार
३. प्रार्थना
४. तरंग
७. धैर्य
८. भोजन
९. मक्खीचूस
१०. नया

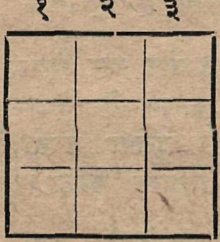

विनोद-वर्ग

नीचे दिए हुए संकेतों की सहायता से इसे पूरा करो।

दाएँ से बाएँ :

१. अयोध्या
२. तीन घंटे
३. औरत

ऊपर से नीचे :

१. अन्य
२. श्रम
३. पृथ्वी

अगर न कर सको तो जवाब के लिए ७५-वाँ पृष्ठ देखो !

डाकू और लड़का

काशी प्रसाद श्रीवास्तव 'कुसुम' बी. ए. विशारद

सुनाऊँ तुम्हें कहानी एक;
भरा है जिसमें पूर्ण विवेक।
अगर तुम पढ़ो इसे दे ध्यान,
सीख लोगे गुण एक महान।

एक लड़का था माँ का भक्त,
परम आज्ञा-पालक अनुरक्त;
उसे माँ सिखलाती दिन रात-
'झूठ बोलना बुरी है बात;

झूठ सें बड़ा न कोई पाप,
झूठ से मिलता, बस सन्ताप।
प्राण पर भी हो कष्ट महान
झूठ मत कहना रहते जान।'

एक दिन घर से अपने दूर,
कहीं जाने को हो मजबूर
हुआ बेटा सज कर तैयार।
कहा माँ ने उसको कर प्यार-

'राह में वन पड़ता है घोर,
वहाँ होंगे बहु डाकू-चोर।
पहन लो, अस्तरवाला कोट।
सिले हैं दस दस के दस नोट,

इसी के अस्तर में अनजान।
न डाकू सकते हैं पहचान।'
गया जब लड़का घर सें दूर,
मिले पथ में कुछ डाकू क्रूर।

किसी ने पकड़ी उसकी बाँह;
किसी ने रोकी उसकी राह;
किसी ने ली लाठी ही तान;
किसी ने पाकेट डाले छान;

किसी को मिली न कौड़ी एक;
किसी को हुआ न जरा विवेक;
हार कर हुए सभी लाचार।
कड़क कर तब बोला सरदार-

'पास में क्या तेरे कुछ नहीं ?
बता दो बातें सारी सही।'
दिया उसने उत्तर-'दस नोट-
छिपाए है यह मेरा कोट।'

खोज कर डाकू सारे थके;
नोट को किंतु नहीं पा सके।
कहा—'झूठा यह है शैतान!
व्यर्थ ही करता है हैरान।'

फाड़ कर कोट नोट धर दिया,
और उत्तर बालक ने दिया-
'मैं न तुमसे उतना डरता,
झूठ से हूँ जितना डरता।'

चरण पर बालक के गिर पड़ा,
डाकुओं का स्वामी भी कड़ा।
कहा तब खाकर उसने शपथ-
'आज से छोड़ा सारा कुपथ।'

करके देखो !

काठ की एक चौकोर पेटी ले लो। उसकी एक तख्ती खोल कर बीच में एक गोल छेद कर लो। तब पानी से भरा हुआ काँच का एक गिलास लेकर उसे चित्र में दिखाई हुई तरह पेटी के अंदर रखो। फिर काँच का एक लंबा टुकड़ा लेकर पेटी के दो कोनों के बीच खड़ा कर दो, जिस से पेटी दो

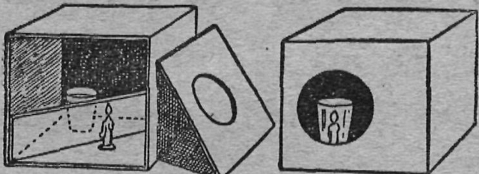

त्रिकोणों में बँट जाए। अब काँच के इस पार एक मोम-बत्ती जला दो। फिर छेद की हुई तख्ती लगा कर पेटी बंद कर दो। अब छेद से देखने पर मालूम पड़ेगा कि मोम-बत्ती गिलास के अंदर जल रही है।

एक सफेद कार्ड लेकर उसके बीच से एक गोल टुकड़ा कतर लो। उस टुकड़े के अंदर चित्र में दिखाई हुई तरह नीली स्याही से छः कोनों वाले तारे का चित्र बना लो। फिर टुकड़ा किसी पैनी चीज़ से छेद कर उसे उँगली से घुमाओ। तुम्हारा बनाया हुआ तारा नहीं दिखाई देगा। टुकड़े के

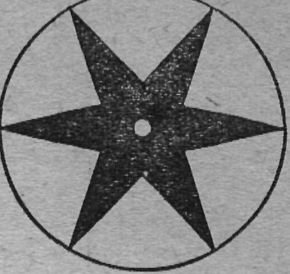

बीच में गाढ़ा नीला रंग दिखाई देगा। पर जाते जाते रंग हलका हो जाएगा और किनारे पर सिर्फ सफेदी ही दिखाई देगी।

चन्दामामा पहेली का जवाब

1 वि	नो	2 दी		3 दु	र्ब	4 ल
ला		वा		हा		ह
5 प	हे	ली		6 ई	श्व	र
7 सा	ग	8 र		9 कं	ग	10 न
ह		सो		जू		वी
11 स	गा	ई		12 स	द	न

इक्का क्या हो गया ?

यह तमाशा देखने पर दर्शकगण बहुत चकित हो जाएँगे। इस तमाशे के लिए ताश की किसी गड्डी को खास तौर पर तैयार करने की जरूरत नहीं। मामूली गड्डी में से बाजीगर चारों इक्के निकाल लेगा और बाकी पत्तियाँ दर्शकों को दे देगा। फिर बाजीगर चारों इक्कों को पेज पर चित्र में दिखाई हुई तरह बिछा देगा। दर्शकों के देखने के बाद वह उन्हें लेकर बाकी पत्तियों में मिला देगा और गड्डी दर्शक की जेब में ही रख देगा। 'एक! दो! तीन! अपनी जेबों को हिफाजत से रखिए!' वह कहेगा। दर्शक अपनी जेब कस कर पकड़ लेगा। 'एक! दो! तीन! अपनी जेब में से चारों इक्के मुझे दे दीजिए!'

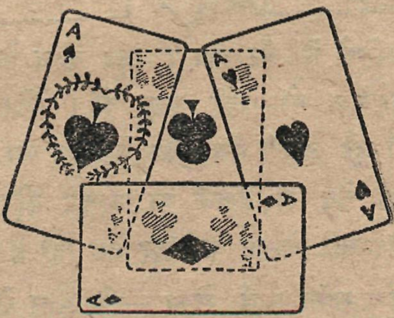

बाजीगर दर्शक से कहेगा। दर्शक जब जेब से गड्डी निकाल कर देखेगा तो उसमें तीन ही इक्के होंगे। चिडी का इक्का उसमें न होगा। तब बाजीगर उस इक्के को अपने बटुए से निकाल कर दिखा देगा। इसका रहस्य यह है—

बाजीगर पहले ही चिडी के इक्के को अपने बटुए में रख लेगा। दर्शकों को चारों इक्के दिखाते वक्त वह इक्के के बदले चिडी की पंजी लेकर उसको चारों ओर से दूसरे इक्कों से ढक देगा जिससे दर्शकों को मालूम पड़े कि वह चिडी का इक्का ही है। इस तरह बाजीगर दर्शकों को भ्रम में डाल कर तीन ही इक्के ताश में मिला देगा। पर दर्शक समझेंगे कि चारों इक्के उसी में हैं। जेब से निकाल कर जब वह ढूँढ़ने लगेगा तो उसे कहीं चिडी का इक्का न दिखाई पड़ेगा। दर्शक सभी हैरान हो जाएँगे कि इक्का क्या हो गया? चारों ओर से सवालों की बौछार होगी। तब बाजीगर अपने बटुए से खोया इक्का निकाल कर उन्हें दिखा देगा। वे सब हैरत में डूब जाएँगे।

जो इस सम्बन्ध में प्रोफेसर साहब से पत्र-व्यवहार करना चाहें वे इनको 'चन्दामामा' का उल्लेख करते हुए अंग्रेजी में लिखें।

प्रोफेसर पी. सी. सरकार, मेजीशियन,
१२/३ जमीर लेन, बालीगञ्ज, कलकत्ता-१९

दीप सजाओ !

[अशोक बी० ए०]

दीप सजाओ !
मोद मनाओ !
लो अब आई है दीवाली !
करो सफाई
और पुताई !
रहें न अब दीवालें काली !
कूड़ा – कर्कट
फेंको झटपट !
उसमें, जो बहती है नाली !
छोड़ पटाके !
धक्के खाके
मुख से कभी न बकना गाली !
लक्ष्मी – पूजन
करो मुदित-मन !
नाचो-गाओ दे दे ताली !
जुआ न खेलो !
शिक्षा ले लो !
होगी सच्ची तभी दिवाली !

विनोद-वर्ग का जवाब :

दाएँ से बाएँ : १. अवध २. पहर ३. रमणी
ऊपर से नीचे : १. अपर २. वहम ३. धरणी

रङ्ग भरो—चौथे चित्र की कहानी

राजकुमार को इस तरह छत से लटकते हुए कई दिन बीत गए। बेचारे को यह भी नहीं मालूम न हुआ कि उसे किस अपराध का दंड मिल रहा था। लेकिन एक बात बड़ी अजीब थी। वह यह कि कई दिनों तक भूखे-प्यासे छत से लटकते रहने पर भी राजकुमार ने बिलकुल कमजोरी न महसूस की। इस तरह उनतीस दिन बीत गए। तीसवें दिन उस महात्मा ने अपनी आँखें खोलीं। उसने जब अपना हाथ उठा कर राजकुमार की तरफ इशारा किया तो राजकुमार सीधे छत से उतर कर उस महात्मा के पास जा खड़ा हुआ। महात्मा के पूछने पर उसने सारी कहानी कह सुनाई। तब उस महात्मा ने अपनी जादू की लकड़ी सामने रखी हुई खोपड़ी से तीन बार छुला कर कहा—'राजकुमार के प्रश्न का जवाब दो!' तब खोपड़ी बोली—'यहाँ से पच्छिम की ओर कई योजन जाने पर एक रेगिस्तान में एक ठूँठ पर एक पचरंगा तोता है। उसे ले आने पर तुम्हारी इच्छा पूरी होगी।' यह कह कर खोंपड़ी चुप हो रही। तुरन्त राजकुमार महात्मा का आशीर्वाद पाकर तोते की खोज में चला। अनेक कष्ट उठा कर आखिर वह उस जगह पहुँचा। लेकिन उस ठूँठ पर जो तोता था, वह पाँच रंग वाला नहीं था। वह सिर्फ सफेद था। उस ठूँठ से एक भयंकर सर्प लिपटा हुआ फुफकार मार रहा था। ठूँठ के बारे में खोंपड़ी ने जो कहा था उसमें साँप का कहीं जिक्र न था। फिर यह तोता भी सफेद था! तब राजकुमार को शक हुआ कि खोंपड़ी का बताया ठूँठ कोई दूसरा होगा। लेकिन चारों ओर देखने पर उसे मालूम हुआ कि उस रेगिस्तान में मीलों तक कहीं कोई दूसरा ठूँठ नहीं है। राजकुमार को कुछ नहीं सूझा कि क्या किया जाय। इस तरह दो-तीन दिन बीत गए। तब राजकुमार ने देखा कि तोता जो पहले दिन सफेद दिखाई दिया, दूसरे दिन काला बन गया; तीसरे दिन लाल और चौथे दिन पँचरंगा बन गया। अब राजकुमार के निराश हृदय में आशा का संचार हुआ। उसने निश्चय कर लिया कि ठूँठ से लिपटे हुए महा-सर्प को किसी न किसी तरह मार कर उस तोते को पकड़ लेना चाहिए।

रङ्ग भरो (कहानी) : चित्र ५

सोलार पेन्स
मजबूती सुन्दरता और अच्छी लिखावट के लिए
वे बहुत सस्ते हैं !
हमेशा "सोलार" लीजिए
शास्त्री पेन वर्क्स ★ तेनाली

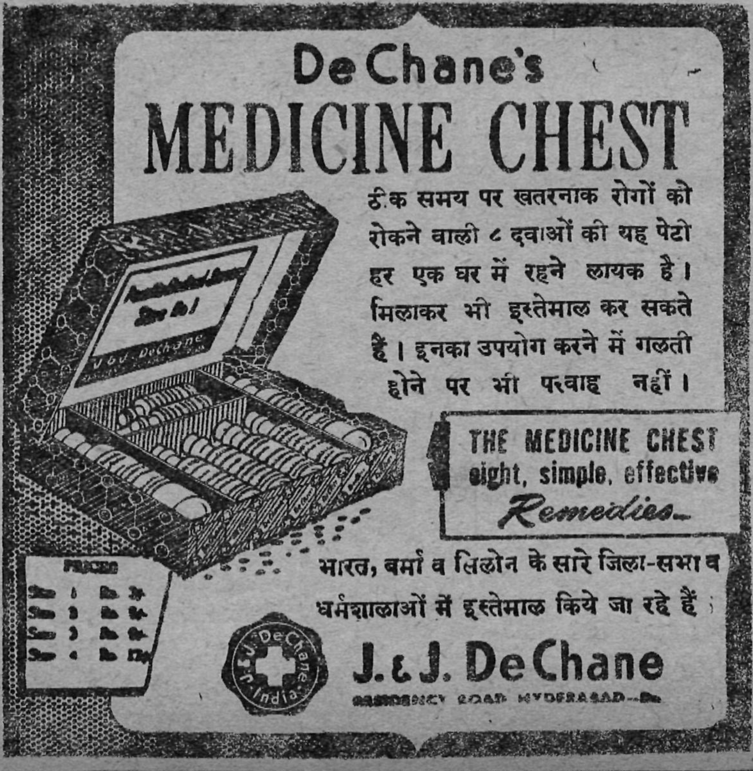
DeChane's
MEDICINE CHEST
ठीक समय पर खतरनाक रोगों को रोकने वाली ८ दवाओं की यह पेटी हर एक घर में रहने लायक है। मिलाकर भी इस्तेमाल कर सकते हैं। इनका उपयोग करने में गलती होने पर भी परवाह नहीं।
THE MEDICINE CHEST
eight, simple, effective
Remedies
भारत, बर्मा व सिलोन के सारे जिला-सभा व धर्मशालाओं में इस्तेमाल किये जा रहे हैं।
J.&J. DeChane

धातु के 'ऐरिस' खिलौने :: बच्चों के लिए आकर्षनीय रंग, सस्ते, टिकाऊ।

बनानेवाले :
ऐरिस म्यानुफेक्चरर्स, मद्रास - ४.

प्रधान एजन्ट : शोभा एजन्सीस
३२/३३, लिंगिचेट्टी स्ट्रीट मद्रास - १.

उत्तर भारत के एजन्ट : मेकडोवेल & कंपेनी लि० सेकेंडलाइन बीच, मद्रास.

कंटेली चम्पा
केश तैल
KATELICHAMPA
HAIR OIL
ताजे फूलों की गन्ध
और केश शोभा के लिये
सर्वोत्तम

वीर-बच्चा
बच्चों के लिये सर्वोत्तम पुष्टई
दुबले पतले बच्चों को मोटा ताजा
और नीरोग रखने के लिये
VEER-BACHHA
A TONIC FOR CHILDREN
बिड़ला लेबोरेटरीज
कलकत्ता

इसके इस्तेमाल से
कमजोर बच्चे
ताकतवर बनते हैं।

डोंगरे बालामृत
के. टी. डोंगरे
एन्ड कम्पेनी
बम्बई - ४.

Controlling Editor SRI CHAKRAPANI
Printed and Published by B. NAGI REDDI at the B. N. K. Press Ltd., Madras - 1

Chandamama, Nov. '51 Photo by Moorthy Vasan

फुलझड़ियाँ

CHANDAMAMA (HINDI) DEEPAVALI NUMBER 1951 REGD. NO. M. 5452

रङ्ग भरो (कहानी) चित्र ४